

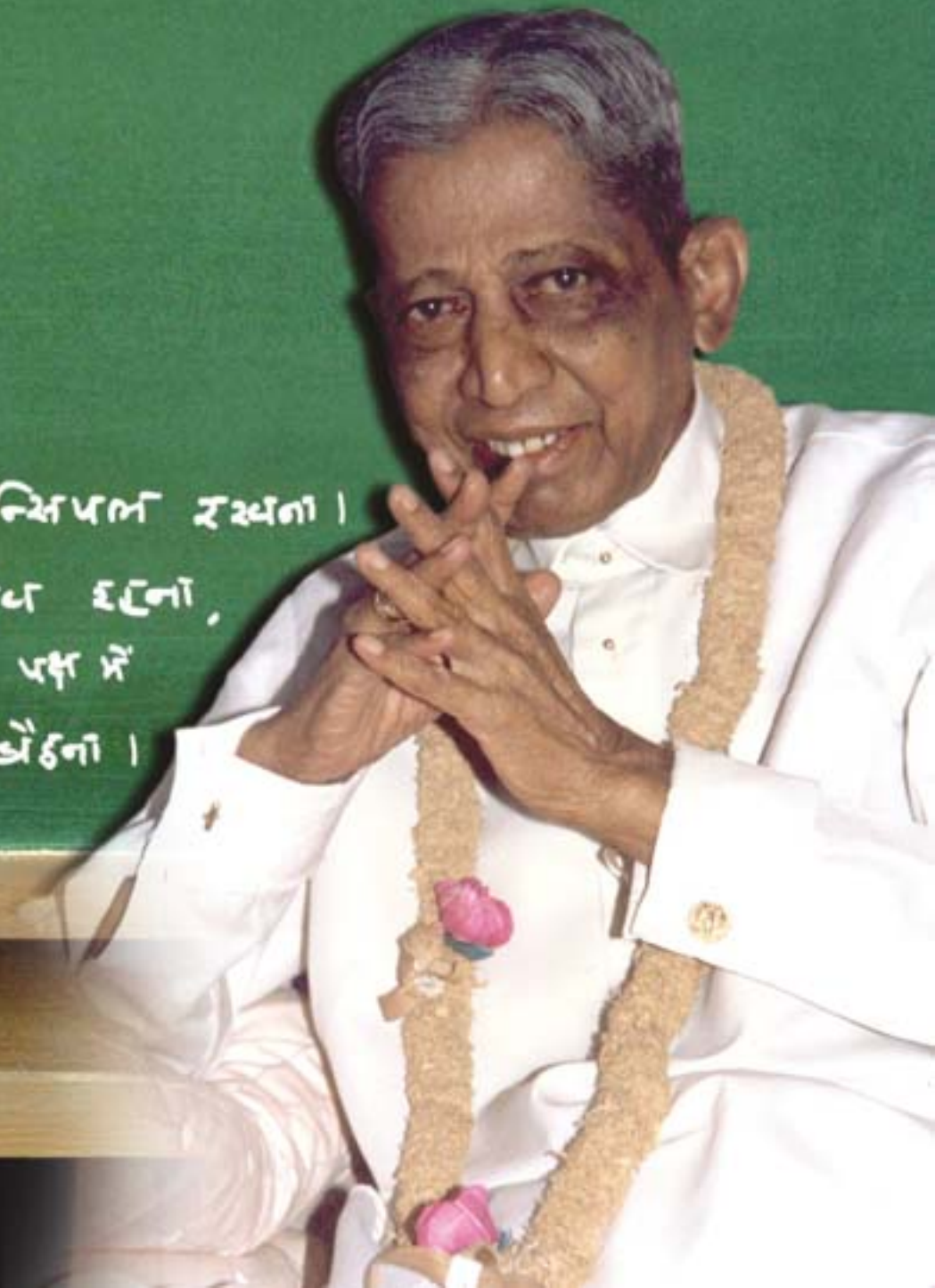
सितम्बर २००९

# दादावाणी

मूल्य रु. १०

—  
—  
—  
+  
+  
+

जीवन में एक प्रिन्सिपल रहना ।  
दुमेशा पोजिटिव रहना,  
नेगेटिव के पक्ष में  
कभी मत खड़ेना ।



तंत्री तथा संपादक :

दीपक देसाई

वर्ष: ४, अंक : ११

अखंड क्रमांक : ४७

सितम्बर २००९

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ वे,  
पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-३८२४२१

फोन : (०७९) ३९८३०१००

e-mail :

dadavani@dadabagwan.org

अहमदाबाद : (079) 27540408

वडोदरा : (0265) 2414142

मुंबई : 9323528901

राजकोट त्रिमंदिर :

9924343478, 9274111393

U.S.A. : 785-271-0869

U.K.: 07956476253

Website : www.dadashri.org

Hindi.dadabagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :

Deepak Desai on behalf of  
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printer/Press :

Mahavideh Foundation  
Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )

१५ साल का

भारत : ८०० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के  
नाम से भेजे।

# दादावाणी

रहना सदा पॉजिटिव, व्यवहार में...

## संपादकीय

व्यवहार में वाणी, वर्तन, आचार, विचार, चिंतन, अभिप्राय या धर्म को लेकर होनेवाले साहजिक पॉजिटिव (हकारात्मक) और नेगेटिव (नकारात्मक) प्रतिभावों के बारे में हमने कभी गंभीरता से सोचा ही नहीं है न? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि इन तीन वाक्यों के आधार पर समस्त जगत् चल रहा है; (१) जीव मात्र को हमसे किंचित् मात्र दुःख नहीं हो, यह पॉजिटिव अहंकार है, इससे सुखी होते हैं। (२) जरा-सा अपमान हो जाए तो उसके बैर की वसूली करे, वह नेगेटिव अहंकार है, उससे दुःखी होते हैं। और (३) मोक्ष में जाना है तो आरोपित भाव से, अहंकार से मुक्त हो जाइए।

जीवन में धारणा के अनुसार नहीं होने पर, अपमान होने पर, सम्मान की रक्षा नहीं होने पर, मोह-अपेक्षा अनुसार नहीं मिलने पर, किसी के द्वारा नुकसान होने पर नेगेटिव भाव खड़े हो जाते हैं। किंतु जो छूटना चाहते हैं, वे नेगेटिव के कारणों की खोज करके पॉजिटिव से उसका भाग करके उस नेगेटिव को उड़ा दें। ज्ञान से नेगेटिव का भाग करने पर ही कर्त्तापन, मान, मोह, लोभ की गाँठ छूटेगी और जीवन में शांति होगी, तभी मोक्षमार्ग में प्रगति हो सकेगी।

एक सिक्के के दो पहलू की तरह हमारे दैनिक जीवन व्यवहार के साथ ‘पॉजिटिव’ और ‘नेगेटिव’ जुड़े हुए हैं। पॉजिटिव भगवानपक्षीय है जबकि नेगेटिव शैतानपक्षीय है। नेगेटिव से दुःख और पॉजिटिव से सुख की प्राप्ति होती है। आत्मा का पक्ष पॉजिटिव है, बुद्धि का पक्ष नेगेटिव है। जिसका मन सदा के लिए पॉजिटिव हो गया, वही भगवान। नेगेटिव, संसारी बातों में समय गँवाए, सुख नहीं आने दे और संसार से बाहर नहीं निकलने दे। सांसारिक व्यवहार में नेगेटिव मिटाने में जितना समय व्यर्थ गँवाते हैं, उसके बजाय उतना समय पॉजिटिव में रहे तो नेगेटिव अपने आप मिट जाएगा। दादाश्री कहते हैं कि व्यवहार में पॉजिटिव रहना, नेगेटिव मत होना। पॉजिटिव रहने पर संसार की कोई अड़चन आपको नहीं छुएगी।

पॉजिटिव-नेगेटिव के बारे में सही समझ, दादाश्री के श्रीमुख से निकले सत्संग में से प्राप्त होती है। जो हमें जीवन में आशा-निराशा या सुख-दुःख के समय नोर्मालिटी में रहकर सच्चा समाधान प्राप्त कराती है और नेगेटिव से मुक्ति दिलाकर पॉजिटिव को ग्रहण करवाकर सही मानों में जीवन को जीने लायक बनाती है।

सैद्धांतिक समझ प्रदान करते हुए दादाश्री कहते हैं कि, ‘जीवन में एक प्रिन्सिपल (सिद्धांत) रखना। हमेशा पॉजिटिव रहना, नेगेटिव के पक्ष में कभी भी मत बैठना। सामने से नेगेटिव आए वहाँ मौन हो जाना।’ ज्ञान प्राप्ति के बाद अब हमें क्या करना है? ‘समभाव से निकाल (निपटारा)’ करके नेगेटिव को छोड़ते जाएँ, ताकि पॉजिटिव अपने आप रहेगा। फिर, व्यवहार में पॉजिटिव और निश्चय में पॉजिटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं, वही वीतराग दशा है। ऐसी वीतराग दशा तक की प्रगति हेतु, पॉजिटिव पुरुषार्थ में आने की सच्ची समझ प्राप्त होने में यह संकलन सहायक सिद्ध हो, इसी अभ्यर्थना के साथ जय सच्चिदानंद।

दीपक देसाई ...✍

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

रहना सदा पॉजिटिव, व्यवहार में...

**परिणाम नियमन किस शक्ति के आधार पर?**

**प्रश्नकर्ता :** मेरी पत्नी के साथ मेरा जीवन बहुत सुखी था, तो भगवान ने अट्टाइस साल की उम्र में ही उसे मुझसे क्यों छीन लिया, यह मेरी समझ में नहीं आता है। भगवान ऐसा क्यों करते हैं?

**दादाश्री :** ऐसा है, कि जंग लगे हुए लोहे को यदि अपने मूल स्वभाव में लाना हो तो ऊपर की जंग निकालने के लिए उसे गर्म करना पड़ेगा या नहीं? फिर उसे ठोकना पड़ेगा या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, झाड़-पोंछ करनी होगी।

**दादाश्री :** वैसे ही, मनुष्य पर यह जो सब आपत्ति आती है न, वह उसे शुद्ध करती है, समझ में आता है न? वर्ना, यदि आपकी पत्नी जीवित होती और ज्यों का त्यों चलता रहता तो आप कुछ दवाई आदि करनेवाले नहीं थे।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो आपने सही कहा दादाजी, जब वह जीवित थी तब मैं सब नास्तिक का ही पढ़ता था और लिखता भी नास्तिक की तरह ही था। लायब्रेरी में जब कोई धार्मिक पुस्तक हाथ में आ जाती तो उसे फेंक देता था कि ‘यह कहाँ बीच में आ टपकी, यह सब गलत है।’

**दादाश्री :** आप कोई दवाई नहीं करते और रोग रह जाता, रोग बढ़ता जाता। यह तो आपकी दवाई हो रही है।

**प्रश्नकर्ता :** मगर दादाजी, तब मैं धार्मिक

नहीं था। किंतु उस परिस्थिति में भी मैं इतना अशांत नहीं था, जितना आज हूँ।

**दादाश्री :** अशांत नहीं थे, फिर भी जब आप दोनों के बीच मतभेद हो जाए तो दुःख तो होता होगा न! उसके साथ कभी मतभेद तो हुआ होगा न?

**प्रश्नकर्ता :** शायद ही कभी हुआ होगा। और हुआ तो तब भी एक-दो दिन से ज्यादा नहीं चला होगा।

**दादाश्री :** हाँ, मगर वस्तुस्थिति क्या है कि यों ही अगर कोई खत आ जाए कि ‘भैया आपने तो ऐसा कर दिया’ तब भी असर हो जाता है, हर वस्तु का असर होता है। यह सारा बाँड़ी (शरीर) इफेक्टिव (पारिणामिक) है।

**प्रश्नकर्ता :** उस समय दादाजी, मेरा अभिगम ऐसा रहता था कि कोई भी मुश्किल आए या कुछ भी हो, तब भी मेरा आत्मविश्वास रहता था कि मैं उसे पार कर जाऊँगा। शायद यह मेरा इगो (अहंकार) ही कहलाए, वह इगो ही है, मगर मैंने कभी ज़रा-सी भी अशांति या द्विधा का अनुभव नहीं किया था। दुनिया की भौतिक मुश्किलों में से पार निकल जाता था किंतु यहाँ पर मार खा गया।

**दादाश्री :** हम यह जो जीवन जीते हैं न, उस जीवन जीने में दो तरह के परिणाम आते हैं। जब पॉजिटिव (हकारात्मक) रिज़ल्ट आता है तब सब आपकी धारणा के अनुसार होता है। आप जैसी

## दादावाणी

धारणा करें वैसा, उलटा करने पर भी सब सीधा हो जाए। यानी ऐसे सब एंविडन्स (संयोग) आपको मिलते रहें। आपकी इच्छानुसार संयोग मिला करें। लेकिन जब नेगेटिव (नकारात्मक) परिणाम आता है उस समय सब आपकी इच्छा से उलटा ही होता है। अर्थात्, ये पॉजिटिव और नेगेटिव शक्तियाँ काम कर रही हैं। आपको उन दो शक्तियों के वश रहना पड़ता है।

### पॉजिटिव-नेगेटिव असर

**प्रश्नकर्ता :** हम यदि आत्मा हैं, मूलतः हम आत्म स्वरूप हैं और इन पॉजिटिव-नेगेटिव शक्तियों से कुछ कहते नहीं हैं तो भी वे हमें परेशान क्यों करती हैं?

**दादाश्री :** मूल रूप से यदि आत्मस्वरूप हो जाएँ तो फिर पॉजिटिव और नेगेटिव शक्तियाँ आपको छूती नहीं हैं। फिर असर नहीं करती। मगर इस समय आप मूल रूप से अभी आत्मस्वरूप हुए नहीं हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** यह पॉजिटिव-नेगेटिव जो होता है वह भ्रम है या अहंकार को लेकर होता है?

**दादाश्री :** नहीं, वह भ्रम नहीं है, सच्ची बात है। हमारी धारणा अनुसार सबकुछ होता रहे। हम जो भी धारणा करें वह सबकुछ हो जाए। उलटा डालने पर भी सीधा पड़े, वह पॉजिटिव का स्वभाव है और दूसरा, नेगेटिव टाइम आया कि सब उलटा ही पड़ता है। सीधा डालने पर भी उलटा पड़े सब।

### नेगेटिव को ही पॉजिटिव माना, वहाँ...

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, आप निषेधात्मक क्रियाओं की बात करते हैं यह मैं समझ गया। निषेधात्मक-नेगेटिव, बाह्य में नेगेटिव, कुछ चीजें नहीं हो पाती, जैसे कि झूठ बोलना बुरा है।

**दादाश्री :** ऐसा है कि, (झूठ बोलना) जो

पॉजिटिव नहीं है न, तो फिर (बुरा है ऐसी) नेगेटिव की बात किस लिए करता है? पॉजिटिव है क्या? यह पॉजिटिव है? इज़ इट करैक्ट? (क्या वह सही है?) यदि पॉजिटिव सही हो तो नेगेटिव गलत कहलाए। लेकिन पॉजिटिव सही है ही नहीं तो फिर नेगेटिव को गलत कैसे कहा जाए? मतलब नेगेटिव करना किस आधार पर है कि यह माना हुआ तेरा पॉजिटिव शत-प्रतिशत झूठ है सब। इसलिए नेगेटिव किस लिए कहते हैं कि भैया, पॉजिटिव कुछ अलग वस्तु है, यह (माना हुआ पॉजिटिव) नहीं हो सकता।

**प्रश्नकर्ता :** मगर उसके लिए ज्ञान की उपलब्धि चाहिए न? वह आप दें तब हो सके न?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं। 'वह आप दें', ऐसा नहीं। देते हैं वह ज्ञान अलग है। और यह तो बुद्धि से समझ में आए ऐसा है, कि पॉजिटिव को तू जानता नहीं है और जो नहीं है वहाँ पॉजिटिव मानकर बैठ गया है। इसलिए हम तुझे कहते हैं कि तू जिसे पॉजिटिव मानता है वह नेगेटिव है। हम तुझे नेगेटिव की राह पर नहीं ले जा रहे हैं, लेकिन तुझे यह बताना चाहते हैं कि तू जिसे पॉजिटिव मानता है वही नेगेटिव है, ताकि तुझे कभी यह विचार आए कि 'अरे! यदि यह है तब फिर पॉजिटिव क्या होना चाहिए?' ऐसा विचार आएगा कि नहीं आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, उस पॉजिटिव को तो जानना ही है।

**दादाश्री :** तुझे ऐसा लगता है न कि मैं तुझे नेगेटिव की राह पर नहीं ले जा रहा, और मैं ऐसा कहना चाहता हूँ कि जो तूने पॉजिटिव माना है वह सब नेगेटिव है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, बराबर है।

**दादाश्री :** अब यदि वह नेगेटिव है तो वहाँ पॉजिटिव क्या होना चाहिए? यह विचार आना चाहिए कि नहीं आना चाहिए? अर्थात्, हमारा यह नेगेटिव

## दादावाणी

का रास्ता नहीं है, मैं तुझे सही पॉजिटिव खोजने को कहता हूँ। नेगेटिव को पॉजिटिव मानते हैं इसलिए सुख नहीं मिलेगा।

**क्या कोई शक्ति होगी, मनुष्य में?**

मनुष्य में शक्ति है? क्या तुझमें शक्ति है?

**प्रश्नकर्ता :** शक्ति मतलब कौन-सी शक्ति की बात करते हैं आप?

**दादाश्री :** क्या कोई भी शक्ति है?

**प्रश्नकर्ता :** शक्ति तो है ही, बिना शक्ति के भक्ति कैसे की जाए?

**दादाश्री :** बता, कौन-सी शक्ति है तुझ में?

**प्रश्नकर्ता :** शारीरिक शक्ति।

**दादाश्री :** अच्छा! फिर इस समय यदि तेरे सामने भैंसा आ जाए तो तू उसे हरा देगा न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं। वह तो रिलेटिव की बात हुई, उसमें उसकी शक्ति मुझसे विशेष होती है। मतलब वह सापेक्ष है।

**दादाश्री :** फिर तो वह शक्ति कहलाए ही नहीं। जहाँ, शक्ति में मालिक ज्यादा शक्तिवाला हो तब उसे शक्ति कह ही नहीं सकते न? उसे शक्ति कैसे कह सकें? संडास जाने की शक्ति है तेरी? अरे, संडास जाने की भी शक्ति नहीं है और सारी दुनिया यों ही शोर मचाती है। क्या तेरी अपनी शक्ति है? स्वतंत्र शक्ति है संडास जाने की?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जी।

**दादाश्री :** किसी भगवान को भी नहीं थी, मुझे भी नहीं है और किसी को भी नहीं है। और फिर भी व्यर्थ ही उछल-कूद करते रहते हैं कि, 'मैंने ऐसा कर डाला और वैसा कर डाला...'। तब क्या सो जाने की शक्ति है? जब चाहे सो सकता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जी।

**दादाश्री :** तब क्या जागने की शक्ति है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जी।

**दादाश्री :** तो फिर कौन-सी शक्ति है? तू बता मुझे कि मनुष्य में कौन-सी शक्ति है? झूठी बनी-बनाई बातें हैं सब, कि ऐसा कर डालूँ और वैसा कर डालूँ। खुद का भान इसमें नाम मात्र को नहीं है। यह तो इर्द-गिर्द की खबर रखने से भान उत्पन्न होता है। खुद का भान तनिक भी नहीं है और सब सिर पर लिए फिरते हैं। बिना निज भान के व्यवहार सारा निभ रहा है। ज़रा-सा भी भान नहीं है।

**करैक्ट पॉजिटिव पर आए, तब...**

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, ऐसा है कि सारी जिंदगी नेगेटिव ही देखा हो इसलिए वह नेगेटिव ही उसके लिए फिर पॉजिटिव के समान हो जाता है, यही तकलीफ है न?

**दादाश्री :** नहीं। पॉजिटिव हो नहीं जाता है। वह सिर्फ पॉजिटिव मानता है। केवल बिलीफ ही है। बिलीफ यानी, उदाहरण के तौर पर, हमारे पास बैंक में दो लाख रुपये हैं ऐसा मानने से क्या बैंकवाले उसका स्वीकार कर लेंगे? ऑल धीज़ आर रॉंग बिलीफ़्स। इसलिए इस रास्ते पर कभी कोई मनुष्य सुखी दिखाई नहीं देगा। यह रास्ता ही ऐसा उलटा है कि कोई मनुष्य सुखी नहीं हो सकता, चाहे प्रधानमंत्री हो, चाहे प्रेसिडेंट ऑफ इन्डिया हो या राजा हो, सभी दुःखी। सुखी कब दिखाई दे कि खुद जब 'राइट अन्डरस्टैन्डिंग' (सही समझ) पर आए, पॉजिटिव पर आ जाए। करैक्ट पॉजिटिव पर आ जाए। यह माना हुआ पॉजिटिव तो इनकरैक्ट है। यह तो गलत पॉजिटिव है, जहाँ नेगेटिव है वहाँ पॉजिटिव मानकर बैठ गए हैं। क्या ऐसा नहीं मान लिया है? क्या नाम है तेरा?

## दादावाणी

**प्रश्नकर्ता :** चंदुभाई।

**दादाश्री :** क्या तू वास्तव में चंदु है? क्या चंदु तेरा नाम नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** मात्र नाम ही है।

**दादाश्री :** तब तू कौन है? माय नेम इज चंदु, मतलब तू कौन? फलाँ का बेटा, इतनी ही समझदारी है न? तू चंदु है, ऐसा करके कहाँ तक चलाता रहेगा?

**प्रश्नकर्ता :** सारी जिंदगी अँधेरे में ही चलते आए हैं। तो अब इस अँधेरे को कैसे उलिचा जाए?

**दादाश्री :** अनंत अवतार से अँधेरे में चलते आए हैं। भटकन, भटकन और भटकन, पॉजिटिव तो देखा ही नहीं है जीव ने। यदि पॉजिटिव देखे तो ठिकाने पर आ जाए।

**प्रश्नकर्ता :** पहचान ही खो चूकी है पॉजिटिव की।

**दादाश्री :** हाँ, पहचान खो चूकी है और पॉजिटिव को ही नेगेटिव मानते हैं। नेगेटिव को पॉजिटिव मानते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** दुर्गंध का ही अनुभव किया है और सुगंध का तो ख्याल तक ही नहीं आया है।

**दादाश्री :** उसका भान ही कैसे होगा? इसलिए फिर हम उसे, ज्ञान देकर भान में लाते हैं। उसके बाद वह कहे कि, 'हाँ, यह तो मैं नहीं हो सकता, यह चंदुभाई वह मैं नहीं हो सकता।'

### परिणाम, हमारी ही भूल का

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, अब हम कर्त्ताभाव नहीं रखें और हम कर्त्ता नहीं हैं ऐसे ही भ्रम में रहकर हमसे कोई गलत क्रिया हो जाए और उसका दोषारोपण हम ऊपरवाले पर या किसी सुपर पावर पर करें तो वह गलत कहलाए या बराबर कहलाए?

**दादाश्री :** ऐसा कहीं कहा जाता है क्या? भूल हमारी ही है। सभी भूलें हमारी ही हैं। चंदु के नाम पर यदि इनाम आएगा तो तू ले जाएगा या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, ले जाऊँगा।

**दादाश्री :** तेरी योग्यता का तुझे इनाम मिलता है और तेरी अयोग्यता के कारण ऐसे गलत हो जाता है। यु आर हॉल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल (पूर्णरूप से सारी जिम्मेदारी तुम्हारी ही है)। अन्य किसी की दखल ही नहीं है इसमें। बावड़ी में जाकर अंतिम सीढ़ी के ऊपर पानी के पास बैठकर तू कहे कि, 'तू चोर है' तो क्या सुनाई देगा?

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिघोष होगा, 'तू चोर है' ऐसा।

**दादाश्री :** अर्थात् हमें यदि यह पसंद नहीं हो कि वह हमें चोर कहे तो हम कहेंगे कि 'तू राजा है' तो ऐसा प्रतिघोष सुनाई देगा। यह सब तेरा ही प्रोजेक्शन है। प्रत्येक जीव का अपना ही प्रोजेक्शन है। उसमें बेचारे भगवान को बिना वज्रह लोग बीच में लाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, मैं यही कहना चाहता हूँ, झूठे भ्रम में रहकर लोग गलत कार्य किया करते हैं।

**दादाश्री :** मतलब, भ्रम में से बाहर निकलने का रास्ता खोजना चाहिए।

### पॉजिटिव पुरुषार्थ की राह

तू यदि कुछ कर सकता है तो तू क्या कर सकता है इसका रास्ता मैं तुझे बता सकता हूँ। जब तक तू पुरुष (आत्मस्वरूप) नहीं हुआ है तब तक पुरुषार्थ नहीं हो सकता। पुरुष और प्रकृति दोनों का विभाजन होने के बाद पुरुषार्थ शुरू होता है। तब तक मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है। फिर भी वह क्या करता है यह मैं तुझे बतलाता हूँ। नहीं कर सकता फिर भी करता है।

## दादावाणी

मान ले कि तेरी एक आदमी के साथ तकरार हो गई, दूसरे के साथ भी ऐसा हुआ। फिर उस झगड़े से और अन्य पुस्तकें पढ़ने पर तुझे ख्याल आया कि लड़ने में जोखिम है और वह रास्ता अच्छा नहीं है। फिर तू तय करे कि, नहीं अब हमें लड़ना नहीं है। तब कोई कहे, 'सामनेवाला मारे तो उस समय क्या करना?' तब तू कहे, 'समता रखना।' समता रखना यह पुरुषार्थ कहलाए। जब तू ऐसा करे तो तू कुछ पुरुषार्थ करता है ऐसा कहा जाए। क्या यह बात स्वीकार हो सके ऐसी है? तेरी समझ में आए ऐसी बात है यह?

**प्रश्नकर्ता :** समझ गया।

**दादाश्री :** हाँ, और मान ले कि तुझे राह चलते एक बटुआ मिला। उस समय तुझे ऐसा विचार आए कि 'यदि मेरा बटुआ खो गया हो तो मुझे कितना दुःख होता?' ऐसा विचार आने के बाद तू सोचने लगे कि 'कब मुझे इस बटुए का मालिक मिले और मैं उसे यह बटुआ दे दूँ, वह तेरा पुरुषार्थ कहलाए। मतलब तू बात को इस प्रकार समझकर पकड़े तो तू पॉजिटिव पर आया कहलाए। मैं पॉजिटिव पर लाना चाहता हूँ। इस समय नेगेटिव को पॉजिटिव मानता है वह सब पुरुषार्थ नहीं है, लेकिन पॉजिटिव आना चाहिए। समझ में आया कि नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी।

**दादाश्री :** पिता के साथ कभी कहा-सुनी हो जाए, उसमें गुनाह चाहे पिता का हो मगर उनके साथ कलह बढ़ाने पर अंत में क्या परिणाम आएगा? दोनों के रास्ते अलग हो जाएँगे। सेपरेट हो जाएँगे। उसके बजाय साथ रहने की जरूरत है। और अभी दूसरा मकान बना नहीं है, तब तक तो यहाँ रहना पड़ेगा न। ऐसे साथ रहने पर यदि वह कलह करते हों तो हमें शांति रखनी चाहिए, समता रखनी चाहिए। वह पुरुषार्थ कहलाए या नहीं कहलाए?

**प्रश्नकर्ता :** कहलाए।

**दादाश्री :** इस प्रकार समता रखनी है। समता का अर्थ क्या है? कि वह कलह करते हों और हमें मन में क्लेश हो वह समता नहीं है। वह जबानी क्लेश करते हों और हमारा मन खराब नहीं हो उसे समता कहते हैं। उसे ही समता कह सकें न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वही समता कहलाए।

**दादाश्री :** मैं तुझे इस प्रकार पॉजिटिव पर ले जाना चाहता हूँ। नेगेटिव पर ले जाएँ तो मनुष्य खतम हो जाए।

**पॉजिटिव लाइन वही भगवान का पक्ष**

**प्रश्नकर्ता :** नेगेटिववाला क्या फिर नास्तिक हो जाता है?

**दादाश्री :** जिसे हम नास्तिक कहते हैं ऐसा इस जगत् में नास्तिक जैसा कुछ है ही नहीं। केवल पॉजिटिव लाइन (रुख) ही सारी भगवानपक्षीय है। पूरी पॉजिटिव लाइन भगवानपक्षीय है और जो नेगेटिव लाइन है वह शैतानपक्षीय है।

मतलब प्रत्येक मनुष्य पॉजिटिव लाइन में होता ही है। चाहे भगवान में नहीं मानता हो मगर नीति में या अन्य रूप से भी वह पॉजिटिव में होता है। जितना पॉजिटिव है वह भगवानपक्षीय है। पॉजिटिव और नेगेटिव के ऊपर पुस्तक लिखी जा सकती है।

**प्रश्नकर्ता :** पुस्तिका लिख सकते हैं किंतु पुस्तक नहीं लिखा जाए।

**दादाश्री :** नहीं, आराम से एक बड़ी पुस्तक लिख सकें उतना सारा विवरण है।

**प्रश्नकर्ता :** मगर दादाजी, आप जो यह पॉजिटिव की बात करते हैं क्या वह नेगेटिव के विरुद्ध का है? नेगेटिव में द्वंद्व स्वभाववाले पॉजिटिव की बात करते हैं?

## दादावाणी

**दादाश्री :** दोनों पारस्परिक रूप से द्वंद्व ही कहलाएँ, एक है तो दूसरा है, वह द्वंद्व। इसमें दो में से एक है तो प्रतिकारी है, उसे द्वंद्व कहा जाए। लेकिन वस्तुस्थिति में सब द्वंद्व ही होता है। किंतु यह तो हमें यों सहज ही समझ में आ जाए कि यह फलाँ फलाँ पॉजिटिव बात है और यह फलाँ वह नेगेटिव बात है। ऐसा भेद हमारी समझ में आए कि नहीं आए?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, मगर ऐसा बुद्धि से समझ में आए।

**दादाश्री :** नीति वह पॉजिटिव बात है, अनीति वह शैतानी है, चोरी करना वह शैतानी बात है। इन सभी में, इसमें से कौन-सा पक्ष है इतना ही देखना है। पॉजिटिव सारा का सारा भगवान पक्ष है।

### रिअल में आने पर ही पॉजिटिव में आए

पॉजिटिवनेस (हकारात्मकता) बढ़ जाए तो बहुत हो गया। किंतु पॉजिटिवनेस यों ही बढ़ जाए, ऐसा नहीं है। खुद यदि प्रयत्न करने जाए तो पॉजिटिव और नेगेटिव दोनों उत्पन्न होते हैं, क्योंकि खुद को पता नहीं है कि पॉजिटिव कैसे उत्पन्न किया जाए। वह तो खुद रिअल में आने पर ही व्यवहार में पॉजिटिव में आए। 'नेगेटिव', 'पॉजिटिव' नहीं हो सकता और 'पॉजिटिव', 'नेगेटिव' नहीं हो सकता है। क्योंकि दोनों द्वंद्व है और 'खुद' द्वंद्वतीत है।

### 'पॉजिटिव' लाने हेतु 'पॉजिटिव' रास्ता

पॉजिटिव यानी क्या? कुछ निकालना नहीं है, कुछ खिसकाना नहीं है, केवल लाना है।

जैसे कि, तेल का एक पीपा भरा हो, और कोई कहे कि 'इसमें से तेल निकाल लीजिए और खाली कर दीजिए।' हम पूछें कि 'अंदर क्या भरना है?' तब वह कहे 'पानी।' तब हम उसे कहेंगे कि अंदर पानी डालना शुरू कर दे, तेल अपने आप

खाली हो जाएगा। या फिर उस पीपे में गेहूँ डालने हों या अन्य कुछ डालना हो, तो डालना शुरू करें, इससे सारा तेल निकल जाएगा। खाली करना और फिर भरना, उसके बजाय अंदर डालना शुरू कीजिए न ताकि अंदर का सब निकल जाएगा। गेहूँ और पानी, वह सारे बुद्धि के खेल की वजह से दिखाई देता है। मगर यहाँ तो हल इस प्रकार है कि अंदर पॉजिटिव डालिए इसलिए वह नेगेटिव अपनी जगह छोड़कर बाहर निकल जाएगा। अर्थात्, जो जगह छोड़कर बाहर निकल जाए ऐसा है, उसे लोग निकाल-निकाल करते हैं, उलिच-उलिच करते हैं। अज्ञान को उलिचें तो कब अंत आएगा? अज्ञान को प्याले से उलिचना चाहें तो कब उजाला होगा? कब सुबह होगी? उसके बजाय सीधे उजाला ही कर दीजिए न!

### जैसा पुरुषार्थ वैसा परिणाम

सद्भाव करना, ऊँचा भाव करना वह 'पॉजिटिव' पुरुषार्थ है। उससे ऊर्ध्वगति होती है। उलटा भाव करे वह 'नेगेटिव' पुरुषार्थ है। उससे अधोगति मिलती है। और सच्चा पुरुषार्थ तो, 'खुद' पुरुष होकर पुरुषार्थ करे, तो मोक्ष में जा सकें।

### परिणाम 'अहंकार', पॉजिटिव में या नेगेटिव में

यदि संक्षेप में कहना चाहें तो आरोपित भाव, 'मैं चंदुलाल हूँ', वह इगोइज्म भाव है। यदि आपको सांसारिक सुख चाहिए तो उस इगोइज्म का पॉजिटिव उपयोग कीजिए, उसमें नेगेटिव मत घुसाइए और आपको दुःख ही चाहिए तो नेगेटिव अहंकार रखना और यदि सुख-दुःख का मिक्सचर चाहिए तो दोनों इकट्ठा करना। लेकिन यदि आप मोक्ष में जाना चाहते हैं तो आरोपित भाव से मुक्त हो जाइए, स्वभाव भाव में आ जाइए। ये तीन वाक्यों के आधार पर सारा जगत् चल रहा है। ये तीन वाक्य यदि समझ गए और उसके अनुसार चलना शुरू कर दिया तो सारे धर्मों का उसमें समावेश हो गया।



## दादावाणी

अर्थात् ये तीन ही वाक्य हैं, (१) सुखी होने हेतु पॉजिटिव अहंकार, 'किसी को मुझसे किंचित् मात्र दुःख नहीं हो', ऐसा अहंकार वह पॉजिटिव इगोइज्म है। (२) दुःखी होने के लिए नेगेटिव अहंकार। खुद का ज़रा-सा अपमान हो गया हो तो मन में बैर रखे, और फ़ौजदार के पास जाकर उसकी शिकायत करे कि 'उसने घर में तेल के डिब्बों का संग्रह किया है।' अरे! अपने बैर के खातिर ऐसा किया? उसे फ़ौजदार से क्यों पकड़वाया? बैर की वसूली करने। यह नेगेटिव अहंकार है। (३) मोक्ष में जाना चाहें तो 'आरोपित भाव' से मुक्त हो जाइए।

नेगेटिव अहंकार बहुत बुरा अहंकार कहलाए। किसी अन्य को जेल भेजने पर आमामादा हुआ कि तब से ही खुद के लिए जेल के संजोग खड़े कर दिए। हमें तो ऐसा करना है कि जो भी निमित्त आए उसे जमा कर देना चाहिए, क्योंकि वह हमारी पिछली भूलों के आधार पर ही हैं, इसलिए हमें कोई गाली दे तो हमें जमा कर लेनी चाहिए, और फिर उसके साथ व्यापार (हिसाब) बंद कर देना चाहिए। यदि आपको सामने से आनेवाली गाली रास आती हो तो ऐसा व्यापार चालू रखना और दूसरी दो गाली सुनाना किंतु यदि गाली रास नहीं आती हो तो हमें उसके साथ गालियों का व्यापार बंद कर देना चाहिए।

आपको लगता हो कि, 'आइए साहबजी', ऐसे अच्छे शब्दों का प्रतिघोष अच्छा होता है तो ऐसा करना। आपको जो पसंद हो उसका प्रोजेक्ट (परियोजना) आप खुद ही करना। जैसे कि, बावड़ी में जाकर कहना कि 'तू चोर है' तो वह आवाज़ देगी कि, 'तू चोर है' और यदि तुझे ऐसा पसंद नहीं हो, तो तू बोलना कि 'तू राजा है, तू राजा है।' तो वह भी बोलेगी कि, 'तू राजा है, तू राजा है।' ऐसा यह जगत् है।

**आपकी भूलें ही आपकी मालिक**

यह जगत् स्पंदन स्वरूप है और तेरा मालिक

कोई नहीं है। किसी मनुष्य को यदि गारन्टी बॉन्ड चाहिए तो मैं लिखकर दूँगा कि तेरा कोई मालिक ही नहीं है। कोई जीव किसी का मालिक ही नहीं है और किसी जीव में कोई दखल कर सके ऐसा कोई जन्मा ही नहीं है, इसके बावजूद यह जगत् कितना पज़लसम (समस्यारूप) हो गया है! मालिक कौन है? तब कहे, उसके ब्लैंडर्स और मिस्टेक्स दो ही मालिक हैं। ब्लैंडर्स क्या है? जहाँ 'खुद' नहीं है वहाँ आरोप करते हैं कि 'मैं हूँ' वही ब्लैंडर्स है। उस ब्लैंडर्स के जाने के बाद क्या रहा? तब कहे, मिस्टेक्स। यदि सामनेवाला गाली देने आया तो क्या हमें नहीं समझना चाहिए कि यह हमारी पहले की कोई मिस्टेक है? इसलिए हमें उसका समभाव से निकाल (निपटारा) करना चाहिए। भले ही वह गालियाँ सुनाया करे, हम उसे आशीर्वाद देते रहें।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हमारे कर्मों का निपटारा होता जाए।

**दादाश्री :** जब वह गाली दे तो हमें समझना चाहिए कि यह परिणाम आया है उसमें वह गुनहगार नहीं है। परिणाम का दाता है।

**प्रश्नकर्ता :** तब वह निमित्त हुआ।

**दादाश्री :** हमारा हिसाब है।

अन्य जीवों के साथ कुछ भी नेगेटिव वर्तन करना वे सभी भूलें हैं। अन्य जीवों के साथ पॉजिटिव वर्तन करना उसमें भूल नहीं है।

ब्लैंडर्स और भूलें वही आपके मालिक हैं। अन्य कोई मालिक है ही नहीं। यदि भूलें करनी बंद कर दी तो आपका कोई मालिक नहीं है।

**पॉजिटिव अहंकार में समाया धर्म**

पॉजिटिव अहंकार में धर्म समा जाता है। सभी शास्त्र यह कहते हैं, 'दया रखो, सत्य बोलो, चोरी मत करो।' किंतु क्या ऐसा होता है? इसलिए

## दादावाणी

लोगों ने ऐसी पुस्तकों को पढ़ना बंद कर दिया। क्योंकि इन पुस्तकों में लिखे अनुसार होता नहीं है इसलिए ये पुस्तकें किसी काम की नहीं हैं। दया रख नहीं सकते, सत्य बोल नहीं पाते। इसलिए लोगों ने पुस्तकों को टाँड़ पर चढ़ा दिया।

जगत् परिणाम को बदलना चाहता है। किंतु अब वह परिणाम कैसे बदलेगा? जहाँ सारे आचार ही बदल गए हैं। पहले जब पाँच प्रतिशत आचार बिगड़े हुए होते थे तब लोग कहा करते थे कि, 'हम आचार शुद्ध करें, आचार शुद्ध करें।' किंतु आज तो पंचानवे प्रतिशत आचार बिगड़ गए हैं, उसका क्या हो सकता है? जहाँ आचार की नादारी ही निकल चुकी है वहाँ क्या किया जा सकता है? इसलिए हमने यह नयी खोजबीन की है। लोग तो वास्तव में जो 'डिस्चार्ज' है उसे 'चार्ज' मान रहे हैं। उसे हमने निकलवा दिया कि, "आप 'डिस्चार्ज' को 'चार्ज' मानें उसका क्या अर्थ है?" व्यर्थ बात है। धर्म के बीच आचार आता ही नहीं है। यदि आप 'आचार में करता हूँ', ऐसा कहेंगे तो आचार फिर से खड़ा होगा। इससे धर्म खड़ा होगा लेकिन शुद्धता नहीं आएगी। 'डिस्चार्ज' में शुद्धता नहीं आएगी।

अर्थात्, काल के अनुरूप ज्ञान दीजिए!

### समझिए बात को, ज्ञानी की भाषा में

मूलतः प्रत्येक वाक्य में मैं क्या कहना चाहता हूँ यह पूरी बात आपको समझ में आ जाए तो कल्याण हो जाए। मगर लोग यदि बात को अपनी भाषा में ले जाएँ तो क्या हो सकता है? हरएक की अपनी भाषा होती ही है, लोग अपनी भाषा में ले जाकर फिट कर दें लेकिन यह उसकी समझ में आनेवाला नहीं कि 'नियम से अनीति कर।'

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, मैंने भी जब पहलीबार पढ़ा कि 'नियम से अनीति कर' तो मैं सोच में पड़ गया कि इसमें दादाजी क्या कहना चाहते हैं? फिर

मुझे लगा कि यह तो बड़ा गज़ब का वाक्य निकला है।

**दादाश्री :** हाँ, अक्रम विज्ञान का मतलब ऐसा है कि नेगेटिव पॉलिमी ही नहीं है कि, 'तुम क्यों चोरियाँ करते हो और तुम क्यों झूठ बोलते हो? व्यवहार क्यों खराब करते हो?' ऐसी नेगेटिव पॉलिमी ही नहीं है (इस प्रकार यहाँ किसी का नेगेटिव नहीं देखा जाता)।

'ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिमी' यह ध्यान रखना किंतु अब यह वाक्य बेअसर हो गया है। इसलिए अब से हमारा नया वाक्य ध्यान में रखना, 'डिस्ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस' (अप्रमाणिकता उत्तम मूर्खता है)। वह पॉजिटिव वाक्य लिख-लिखकर तो लोग पगला गए हैं। 'बीवेर ऑफ थ्रीव्ज़' (चोरों से सावधान) का बॉर्ड लगाया फिर भी लोग लूट गए। तो फिर बॉर्ड किस काम का? वैसे लोग 'ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिमी' का बॉर्ड लगाते हैं पर 'ऑनेस्टी' (प्रमाणिकता) होती नहीं है तब फिर वह बॉर्ड किस काम का? अब तो नये शास्त्रों और नये सूत्रों की आवश्यकता है। इसलिए हम कहते हैं कि 'डिस्ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस' का बॉर्ड लगाना।

### नौ कलमों के द्वारा पॉजिटिव के पथ पर

सत्संग यानी सत् का योग होना, अच्छी वस्तु का, पॉजिटिव वस्तु का योग होना। नेगेटिव वस्तु का योग होना दुःखदायी है।

पॉजिटिव अहंकार हेतु सारे धर्म चल रहे हैं, एकमात्र पॉजिटिव हेतु के लिए ही, इस पॉजिटिव अहंकार के लिए तू यह सारी नौ कलमों लिख ले और उनके अनुसार चलना शुरू कर दे तो उनमें सारे धर्म समा गए। किसी का नेगेटिव मत करना।

नेगेटिव को तोड़ने में जितना समय व्यर्थ गँवाते हैं उसके बजाय उसे पॉजिटिव में लगा दें तो

अपने आप ऑटॉमेटिकली ही नेगेटिव टूट जाएगा। किंतु लोग नेगेटिव को तोड़ने में बहुत समय गँवाते हैं। अशुभ कर्मों को दूर करने में व्यर्थ ही समय क्यों गँवाते हैं?

### आत्मधर्म से मोक्ष

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर अधर्म दूर करने की हकीकत क्या है?

**दादाश्री :** हाँ, अधर्म को कहाँ निकालना है?

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा अपने मूल धर्म में आ जाए, उसके बारे में बताइए।

**दादाश्री :** हाँ, आत्मा अपने धर्म में आए। अपने धर्म में आए वहाँ हमें अधर्म शब्द की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि धर्म और अधर्म दोनों द्वंद्व हैं।

अधर्म शब्द क्या है? धर्म का विरुद्धार्थी शब्द है। गलत करना वह अधर्म और अच्छा करना वह धर्म। लेकिन दोनों कर्त्ताभाव से हैं। और आत्मा का तो स्वाभाविक धर्म है, स्वाभाविक यानी सहज, मतलब आत्मा अपने धर्म में आया। आप अधर्म शब्द बोले उसका मैंने यह स्पष्टीकरण बतलाया।

**प्रश्नकर्ता :** हम उसे नेगेटिवसेन्स में नहीं लेंगे, इस बात को हम पॉजिटिवसेन्स में ले जाएँगे।

**दादाश्री :** वह बराबर है, उसमें हर्ज नहीं है। मगर यह तो आपको अधर्म शब्द की व्याख्या बतलाता हूँ। व्याख्या समझनी होगी न हमें? उसके बजाय सीधे शब्दों में हम कहें कि आत्मा अपने धर्म में आने पर मोक्ष होता है। अन्य सबकुछ इस धर्म में तो है ही।

### स्वसत्ता कहाँ?

आपके हाथों में परिवर्तन करने की कोई सत्ता नहीं है और दूसरी जो सत्ता है उसकी आपको खबर नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, उस शक्ति की हमें कोई खबर नहीं है।

**दादाश्री :** जो खुद की सत्ता है उसे नहीं जानते हैं। इसलिए बिना खबर के वह सत्ता पड़ी रही है। और जो सत्ता नहीं है उसे सत्ता मानते हैं, मतलब आप फ़ॉरिन डिपार्टमेंट (अनात्म विभाग) को होम डिपार्टमेंट (आत्म विभाग) मानते हैं और होम डिपार्टमेंट की आपको खबर ही नहीं है। क्योंकि फ़ॉरिन को होम माना है। मतलब, सब पराये विभाग का करते हैं, उसमें आपका क्या है? यानी होम डिपार्टमेंट में आएँगे तो काम होगा।

द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ़। देर आर टु व्यू पॉइन्ट्स टु सॉल्व दिस पज़ल; वन रिलेटिव व्यू पॉइन्ट, वन रिअल व्यू पॉइन्ट। मतलब बाय रिलेटिव व्यू पॉइन्ट यु आर 'चंदुभाई' और बाय रिअल व्यू पॉइन्ट यु आर 'शुद्धात्मा'। इस प्रकार से हम आत्मधर्म में ला देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, आपकी बात सुनकर या फिर किताब पढ़कर यह तो समझ में आता है, किंतु उससे अशांति कम नहीं होती है। ऐसा कुछ कर दीजिए जिससे किताब की या सत्संग सुनने की ज़रूरत नहीं रहे और होम डिपार्टमेंट में रह पाएँ। ऐसा कर दीजिए।

**दादाश्री :** यदि आप स्वतंत्र होना चाहते हैं तो, 'मैं परतंत्र हो गया हूँ, परवश हो गया हूँ, मन से परवश हो गया हूँ, बुद्धि से परवश हो गया हूँ, उन सभी से मुझे स्वतंत्र होना है' अभी आप ऐसी भावना कीजिए। फिर जब आपको ज्ञान देंगे तब ऐसा कर देंगे।

### 'क्या नहीं है', यह कैसे जानें ?

**प्रश्नकर्ता :** 'नेगेटिव साइड' के बारे में मुझे बताइए कि 'नेगेटिव साइड' को कैसे जानें?

**दादाश्री :** वह तो मैं आपको ज्ञानविधि के

## दादावाणी

समय सारा स्पष्टीकरण कर दूँगा। उस समय नेगेटिव का सारा स्पष्टीकरण हो जाएगा। फिर इन बातों का मजा आएगा। उसके बाद आपकी समझ में आएगा कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

इसलिए इन लोगों से कहता हूँ, कि 'क्या नहीं है' यह जानकर आइए। तब वे कहें कि 'मैं क्या नहीं हूँ' यह कैसे जानना है? तब मैं उन्हें बताऊँ कि, केवल 'माय' (मेरा) को निकाल दें। जब तू कहता है कि 'मेरा हाथ' तो वह तू (खुद) नहीं है। 'मेरा सिर' तो वह तू (खुद) नहीं है। 'मेरी आँखें' उसमें भी तू नहीं है। इस प्रकार उन सभी में से तू खुद को अलग करता जा। फिर मन को अलग कर। माय माइन्ड, माय इगोइज्म, माय स्पीच, इन सभी में से 'माय' को निकाल दे (अलग कर दे)। तब वह कहे कि 'तब तो मेरा कल्याण ही हो जाए न! अंत ही हो जाए तुरंत!' अरे, फिर कर न! मगर करे कैसे बेचारा? पहले पाप भस्मीभूत होने चाहिए न?

यह सारा जगत् कैसा है? ऐसा करने पर भी अटके और वैसा करने पर भी अटके। यानी, सब सापेक्ष है। एक पूरी होने पर दूसरी अपेक्षा रहा करती है। इसलिए हम पाप भस्मीभूत कर डालें उसके बाद (ज्ञानविधि के बाद) 'यह हूँ' और 'यह नहीं हूँ' यह सब समझ में आ जाए। हम जब लोनावाला गए थे, तब वहाँ पर कुछ फ़ॉरिनर्स आए थे। वह कहने लगा, 'हमें कुछ दीजिए।' मैंने कहा कि, 'सेपरेट आय एन्ड माय विथ ज्ञानीस् सेपरेटर।' मेरा सेपरेटर मैं तुझे दूँगा नहीं, मगर सेपरेशन का अंदरूनी रास्ता दिखलाता हूँ उसके अनुसार तू 'मेरा' अलग कर। किंतु वैसा कैसे कर पाएँ? उनके जो पाप हैं वे नष्ट हुए बगैर वे ऐसी स्थिति को कैसे पा सकें? क्योंकि वे जो पाप हैं न, वे ज्ञान पर आवरण डाल देते हैं, इसलिए पहले पाप नष्ट होने चाहिए। उन पाप के कारण ही याद नहीं रहता न! और महात्माओं को शुद्धात्मा लक्ष्य में क्यों रहता है,

क्योंकि (ज्ञानविधि में) पाप नष्ट हो गए इसलिए शुद्धात्मा निरंतर लक्ष्य में रहा करे।

**प्रश्नकर्ता :** वह जो सूक्ष्म परदा है वह 'रिमूव' हो जाना (निकल जाना) चाहिए न?

**दादाश्री :** हम उसे 'रिमूव' कर देते हैं। फिर हमेशा शुद्धात्मा का लक्ष्य रहता है।

## पॉजिटिव के पक्ष से आत्मानुभव दृढ़

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान लेने के बाद 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलते हैं तो क्या वह साइकोलॉजिकल इफेक्ट (मनोवैज्ञानिक असर) है?

**दादाश्री :** नहीं, वह साइकोलॉजिकल इफेक्ट नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, मैं जब 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलूँ तब...

**दादाश्री :** बोलने की जरूरत नहीं है, अपने आप अंदर से आता है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ।'

**प्रश्नकर्ता :** तो दादाजी, मैं जब बहुत भय में होता हूँ तब ऑटॉमेटिकली (अपने आप) आता है, अन्य समय पर नहीं आता है।

**दादाश्री :** वही सच है, वही अच्छा है। वह तो 'आय' और 'माय' का सेपरेशन हो गया है। इसलिए, अंदर जब भय लगे तब अपने आप ऐसा हो जाए। 'आय' और 'माय' दोनों अलग हो ही गए हैं, इसलिए ऐसा होता है।

तेरे माता-पिता को जब ऐसा अनुभव हुआ था तो वे दौड़े चले आए थे मेरे पास। तुझे भी सेपरेट हो गया है किंतु तू अभी भी उलझा हुआ रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** मैं कैसे उलझा हुआ हूँ?

**दादाश्री :** भय लगता है तब तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यह तेरी समझ में आता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी, भय लगे तब आता है।

**दादाश्री :** यानी तुम्हारा सेपरेट हो ही गया है। किंतु तुम्हारी उलझनें तुम्हारी अपनी हैं। तुम उलटी ओर रहते हो, नेगेटिव साइड में रहते हो, पॉजिटिव साइड में रहना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** पॉजिटिव में कैसे रहा जाए?

**दादाश्री :** तुम हो पॉजिटिव में, फिर भी तुम्हारे मन, बुद्धि तुम्हें घुमाते रहते हैं। झूठी शंकाएँ खड़ी करते हैं कि 'अभी सेपरेट नहीं हुआ है।' तुम मेरे साथ क्यों रहते हो? मेरे पास क्यों अच्छा लगता है तुम्हें? क्योंकि मेरा बिलकुल पॉजिटिव हो गया है, शत-प्रतिशत पॉजिटिव हो गया है।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी जो कहते हैं वह सारी बातें साइन्टिफिक और सच्ची है मगर मुझे अनुभव में नहीं आती है।

**दादाश्री :** अनुभव हो गया है इसका ही यह प्रमाण है। अनुभव में आता है, पर वह समझ में नहीं आता है। वह अनुभव ही तुम्हें मेरे पास ले आता है और वह अनुभव ही तुम्हें मेरे साथ रखता है।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, आपने उस दिन कहा था कि 'अभी यह ज्ञान तो किसी के अनुभव में आया नहीं है, मैं कहूँ और वह (सामनेवाला) शब्द से समझे और बोले, उतना ही।'

**दादाश्री :** अनुभव तो सभी को हो गया है। मैं जो कहना चाहता हूँ वह अलग बात है।

**प्रश्नकर्ता :** वह अनुभव और आप जो कहते हैं उस अनुभव में क्या अंतर है?

**दादाश्री :** उसकी तो बात ही नहीं की जा सकती। वह बात तुम्हारे काम की नहीं है। तुम तो मेइन लाइन पर आ जाओ।

**खुद ब्रह्मांड का मालिक फिर भी...**

यह तो सारे अंतराय हैं, वर्ना आप तो सारे ब्रह्मांड के मालिक हैं। तब कहे कि 'अनुभव क्यों नहीं होता?' सारे अंतराय हट जाएँ तो आप मालिक तो हैं ही। 'अंतराय खड़े किसने किए, भगवान महावीर ने?' तब कहे, 'नहीं, खुद आपने ही। यु आर होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल फोर योर लाइफ।' आपने खुद ही खड़े किए हैं। ज़रा बारीकी से नहीं चलेंगे तो फिर हमारी गाड़ी आगे कैसे बढ़ेगी? अंतराय यहाँ पर कहते हैं कि, 'बारीकी का हिसाब लगा दीजिए। मोटी बात समझ में नहीं आएगी।' हाँ, जब अनंत शक्ति है आपमें तो ऐसा बखेड़ा सोचने की ज़रूरत ही कहाँ रहती है? जिस तरह सब सरलता से चल रहा है वैसे चलने दीजिए न चूपचाप! अग्रसोच में पड़ जाते हैं। 'मैं क्या करूँगा?' कहेंगे। 'यदि भाड़े की रकम नहीं रही तो लॉज में कैसे जा पाऊँगा?' अरे! ऐसा नहीं बोलते, वहाँ सबकुछ तैयार ही है आगे। ऐसा बोलना वही आपका अंतराय है और फिर क्या उसका फल नहीं मिलेगा? खुद ही अंतराय डालनेवाला है। सारे अंतराय खुद के ही खड़े किए हुए हैं। प्रत्येक शब्द अंतराय खड़ा करता है। बिलकुल नेगेटिव बोले तो उसके अंतराय पड़ते हैं, पॉजिटिव के अंतराय नहीं पड़ते।

**अंतरायों से अटका सुख**

**प्रश्नकर्ता :** यह जो अंतराय हैं, उनमें कुछ पॉजिटिव अंतराय होते हैं और कुछ नेगेटिव अंतराय होते हैं। किसी ने प्रमाणानुसार भोजन लिया हो और उसे हम कहें कि थोड़ा और लीजिए, उसे आग्रह करें, उसे जबरदस्ती करके ज्यादा खिलाएँ तो क्या वह अंतराय कहलाएगा?

**दादाश्री :** तब अंतराय टूटा। भोजन पर से खड़ा कर दिया तो अंतराय डाला। मैं यदि लोगों से कहूँ कि, 'भिखारी को कुछ देने जैसा नहीं है' तो

## दादावाणी

फिर मुझसे दिया नहीं जाएगा। देना चाहूँ तब भी मेरे हाथ से छूटेगा नहीं। रोका यानी वह अंतराय कहलाए। कोई भोजन कर रहा हो और आपने उसे उठा दिया कि 'उठो तुम अलग जाति के हो यहाँ क्यों आए हो?' ऐसा करना वह बहुत बड़ा अंतराय डाला कहलाए, जबरदस्त अंतराय कहलाए। मैंने देखा था, अन्य जाति के लोगों को लोग भोजन पर से खड़ा कर देते थे। लोगों ने अंतराय डालने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी है! और इस कारण, अंतराय डालकर, जान-बूझकर अंतराय खड़े करके, बहुत दुःख भुगतते हैं, दुःखी हुए हैं।

### नेगेटिव सोचने की भी मर्यादा

शक्तियाँ तो अंदर भरी पड़ी हैं। कोई कहे कि 'मुझसे नहीं होगा', तो वैसा हो जाए। इस नेगेटिव ने तो लोगों को मार डाला है। नेगेटिव रुख से ही लोगों की मनःस्थिति ऐसी हो गई है।

देखिए न, कहाँ तक के विचार कर डालते हैं। मान लीजिए बारह महीने दुकान नहीं चली हो, तब 'यह दुकान मुझे नादार कर देगी, फिर नादारी ऐसी होगी, उसके बाद हमारी स्थिति ऐसी हो जाएगी', लोग यहाँ तक सोच लेते हैं। एक मनुष्य मुझसे कहने लगा, 'विचार किए बगैर थोड़े ही गुजारा है? बिना सोचे दुनिया कैसे चलेगी?' मैंने कहा, "आप इस ड्राइवर की साथवाली सीट पर बैठ जाएँ, मुंबई में, और फिर ड्राइवर से पूछना कि, 'तू क्या-क्या सोचता है? अब इधर जाऊँगा, फिर उधर जाऊँगा, ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा, क्या तू ऐसा सोचता है?' ऐसे कोई नहीं सोचता।" मतलब, हरएक व्यक्ति को अमुक हद तक सोचना चाहिए फिर उसे सोचना बंद कर देना चाहिए। हरएक बात को लेकर स्टोप कर देना चाहिए। जब मरने की बात होती है तो हम तुरंत स्टोप कर देते हैं, मगर व्यापार की बात हो तो ऐसा नहीं करते। आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** बराबर है, सोचने की भी एक सीमा होती है।

**दादाश्री :** स्टोप करना आता है, नहीं आता ऐसा नहीं है। यह तो रमणता करते हैं। अकल की थैली खोल देते हैं। यदि आज बेटा पिता से लड़ता है तो पिता सोचने लगे कि, 'मैं जब बूढ़ा हो जाऊँगा तब फिर मेरा कौन?' 'अरे! ऐसा यहाँ तक सोच डाला?' आज के दिन के लिए ही सोचना, आनेवाले कल के बारे में सोचने की ना कही है भगवान ने। थिंक फोर टुडे, नोट फोर टुमोरो (आज की सोचिए, कल की नहीं)। और वह भी अमुक बाबत में। गाड़ी में जा रहा हो तो 'गाड़ी टकराएगी तो क्या होगा?' ऐसा सोचता रहे। अरे छोड़िए, उस विचार को बंद कर दीजिए। लेकिन यह तो ठेठ यहाँ तक का विचार कर डाले कि, 'दुकान में नादारी आ जाए, तब उसके बाद की स्थिति और फिर उसके बाद की भी स्थिति क्या होगी? भीख माँगनी पड़ेगी।' और फिर वह घर जाकर पत्नी से कहे, 'भीख माँगनी पड़ेगी।' 'पगले, कहाँ देख आया तू?' कहेगा, 'मेरी सोच ऐसा कहती है।' अब इसे क्या कहे, क्या इसे अकलमंद कहेंगे? अकल तो वह है कि निरंतर सेफसाइड रखे (सुरक्षा का मार्ग बनाए रखे)। किसी भी जगह सेफसाइड का भंग करे उसे अकलमंद कैसे कहें? अकल तो सेफसाइड को बचाकर रखती है, वहाँ तक काम आ सकती है।

मतलब, कितना सोचना है यह यदि मनुष्य समझे तो बहुत हो गया, बहुत से दुःख कम हो जाएँगे। और दूसरा, 'जो भुगते उसकी भूल' यह तय कर ले तो भी बहुत से दुःख कम हो जाएँ। तीसरा, 'टकराव टाले' तो भी बहुत से दुःख दूर हो जाए।

### चार्ज परमाणु हो डिस्चार्ज

यह सब परमाणु के असरवाला है, जो जो परमाणु जमा (चार्ज) किए हैं, वैसे विचार छप जाते

हैं और वही परमाणु डिस्चार्ज होते समय उदय में आते हैं। यदि खुद ही सोचते हों, तो फिर पसंदीदा विचार ही आने चाहिए, किंतु ऐसा नहीं होता है, जैसे परमाणु भरे वैसे निकलते हैं। विचार संयोगों के अधीन हैं।

प्रत्येक परमाणु का एक कोना पॉजिटिव होता है, एक नेगेटिव होता है। हमारे देश में सभी को साथ मिलकर एक आवाज़ में बरसात को 'वेलकम' कहना चाहिए। लेकिन जब बारिश आती है तब कोई कहेगा, 'अभी मत आना।' कोई कहता है, 'जल्दी आना।' फिर कोई कहेगा कि, 'दो दिन बाद बरसना।' नये कपड़े पहने हों और बारिश होने लगी तो बारिश को गालियाँ देने लगे। हरएक अपनी-अपनी सहूलियत के अनुसार बारिश से कहेगा, फिर इसमें बारिश भी बेचारी क्या करे?

### शंका का मातम क्यों?

व्यापार की खबरें चार-पाँच दिनों से खराब आ रही हों और ऐसे में पोस्टमेन आता दिखाई दिया तो मन तुरंत दिखाएगा कि 'आज वह क्या खबर लाया होगा?' वहाँ हमें क्या करना है? पॉजिटिव रहना चाहिए, कि आज अच्छी खबर लाएगा। पोस्टमेन को बुलाने पर फिर खत में से मातम की खबर निकले तो उसे बाजू पर रख देना। मगर हमें तो पॉजिटिव ही रहना चाहिए।

### बुद्धि नेगेटिव, आत्मा पॉजिटिव

आत्मा पॉजिटिव है और बुद्धि नेगेटिव है। बुद्धि विचार करवाए कि, 'यह ऐसा नहीं होने देता और वह वैसा नहीं होने देता।' अरे! 'नहीं होने देता' उसे नहीं देखना है। 'क्या होने देता है?' उसे देखना है। यदि ऐसे पॉजिटिव देखें तब अंदर अनेक रूप से, चारों ओर से मदद मिलती रहे।

अर्थात् बुद्धि हमारा समय बरबाद करती है और हममें आनंद उत्पन्न नहीं होने देती। इस पर

हमें ऐसा बोलना है कि, 'धन्य है यह दिन, मेरा कोई काम अधूरा नहीं है।' श्रीमद् राजचंद्रजी को 'सम्यक्त्व प्रकाशमान हुआ' इस पर वे कहने लगे, 'धन्य रे दिवस यह अहो!'

यानी हमारे यहाँ नेगेटिव बातें नहीं होनी चाहिए, सारी पॉजिटिव बातें होनी चाहिए। नेगेटिव तो संसारी बातें हैं, समय बरबाद करें, उलझन में डालें और सुख नहीं आने दें।

### नेगेटिव शब्दों का कैसा असर?

एक मनुष्य को सोचने पर ऐसा वहम हो गया कि सालभर से दुकान में प्रतिदिन नुकसान ही आता रहता है और फिर मुनीम ने चोरी करना शुरू किया है, इसलिए अब यह दुकान नहीं रहेगी। अक्लमंद को जल्दी पता चल जाता है और अक्ल कम रही हो तो देर से पता चलेगा। अक्लमंद जल्दी से हिसाब लगा लेगा कि यह दुकान नादारी में जा रही है। क्योंकि मन में ऐसा तय हो गया कि नादारी हो रही है, ऐसा डिसीज़न आ गया, इसलिए वह शब्द उसे असर करता रहेगा। जब तक वह शब्द दिमाग से नहीं निकलेगा तब तक वह असर करता रहेगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि आपको जो भी विचार आए उसे आप मेरे पास भेज दीजिए, 'गो टु दादा।' वर्ना सब असर करता रहेगा। शब्द तो बहुत असरदार होता है। असरवाली चीजें हैं ये, उसमें मत पड़ना। मुझे बुखार आया हो तो मैं कभी ऐसा नहीं कहता कि, 'मुझे बुखार आया है।' ऐसा कहूँ तो असर हो जाए।

लोग ऐसा बोलते हैं न कि, 'मेरा दिमाग चलता ही नहीं है।' अरे! ऐसा नहीं बोलते। 'मेरा दिमाग चलता ही नहीं है' ऐसा कहने से तो दिमाग पर बोझ बना रहेगा और फिर बंद हो जाएगा धीरे-धीरे। आप बोले, मतलब आपने हस्ताक्षर कर दिए। इसलिए आप उसे 'दादा' के पास भेज देना, कोई हर्ज नहीं है उसमें।

## दादावाणी

**प्रश्नकर्ता :** यह आपने उत्तम रास्ता दिखलाया।

**दादाश्री :** हाँ, मैं सभी से यही कहता हूँ कि सब मेरे पास भेज दीजिए न। तुझ पर बोझ तो आनेवाला है ही, मनुष्य जो ठहरा, इसलिए बोझ तो आएगा।

### नेगेटिव को उड़ा दीजिए पॉजिटिव से

**प्रश्नकर्ता :** यदि पॉजिटिव विचार करे कि 'मेरा अच्छा ही होनेवाला है, मुझे ऐसा होना है' ऐसे पॉजिटिव विचार करने पर अच्छा ही होगा न!

**दादाश्री :** हाँ, उसमें हर्ज नहीं है। मगर वह नेगेटिव शब्द जो है उसे खिसकाकर फिर बाद में पॉजिटिव विचार करना। वर्ना एक ओर नेगेटिव शब्द का दबाव बढ़ता जाए और पॉजिटिव शब्द की वृद्धि होती जाए, दोनों का मेल नहीं हो सकता इसलिए पहले नेगेटिव शब्द की कमी कर देनी चाहिए। वह शब्द ही उड़ा देना चाहिए।

पैंतीस साल की उम्र में कोई कहे कि, 'मुझे आँखों से कम दिखाई देता है।' कम दिखाई देता है? अरे! क्या आँख के पर्याय नहीं बदलते? क्या सदा के लिए आँख के वही पर्याय (कम दिखाई देता है वही) रखने है तुझे? मैंने कहा कि ऐसा बोल कि, 'मुझे आँखों से अच्छा दिखाई देता है।'

**प्रश्नकर्ता :** आँख से अच्छा दिखता है।

**दादाश्री :** लोग बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं। आँख को अच्छी कहने पर आँख अच्छी तरह देखने लगे फिर। आज मुझे चौहत्तर साल हुए हैं मगर क्या मैं कभी बयालीस का रहा होऊँगा या नहीं? लेकिन लोग ऐसा कहते हैं कि 'बयालीस का हुआ इसलिए मैं अखबार नहीं पढ़ पाता।' अखबार में बारीक अक्षर आते हैं न, लोगों से सुना था कि बयालीस साल होने पर आँखों में नंबर आ जाते हैं। तब मैंने भी नंबर निकलवाए और चश्मा ले आया और

साल-डेढ़ साल पहना। फिर एक दिन घर पर एक शख्स आया। मैंने अपना चश्मा बाजू पर रखा था, उसे लेकर देखने लगा और कहे, 'मैं ज़रा अखबार पढ़ूँ?' मैंने कहा, 'पढ़िए।' वह मेरा चश्मा पहनकर पढ़ने लगा और मुझसे कहा, 'अरे, आपके इस चश्मे से तो मुझे अच्छा दिखाई देता है।' इस पर मैंने कहा, 'ले जाइए और अब वापस नहीं लौटाना।' फिर मैंने बिना चश्मे के पढ़ना शुरू किया तो मुझे दिखने लगा। बारीक अक्षर सारे दिखाई दिए। आज भी बारीक अक्षर पढ़ सकता हूँ। दिन में तो हरकोई पढ़ सके, लेकिन मैं तो शाम को भी पढ़ता हूँ। यानी हमें क्या बोलना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** 'अच्छा है' ऐसा पॉजिटिव बोलना है।

**दादाश्री :** यदि मुँह से नेगेटिव शब्द निकल जाए तो तुरंत उसे बाजू पर रख दीजिए। आप उसे बाजू पर रख दीजिए या फिर उसे 'दादा' के पास भेज दीजिए (तो उसका फल आपको नहीं भुगतना पड़ेगा)। वर्ना उसका मूल मालिक नहीं मिलने पर वह नेगेटिविटी वहाँ खुद के पास ही पड़ी रहती है।

### ज्ञानी बरते पॉजिटिव में

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी को सुनाई नहीं देता न?

**दादाश्री :** वे जो हमारे ज्ञान प्राप्त किए हुए डॉक्टर्स हैं न, महात्माओं में जो डॉक्टर्स होते हैं न, वे ऐसा खोज निकाले कि किसी बहाने 'दादा' की सेवा का अवसर मिले। इसलिए, कान के डॉक्टर्स यह खोज निकाले। मुझसे कहे, 'दादाजी, आपको कम सुनाई देता है तो उसे मैं ठीक कर दूँगा।' मैंने पूछा, 'क्या बरमा लगाना चाहता है तू?' बरमा आप समझते है न? सुथार के पास होता है वह छेद करने के लिए। मैंने पूछा, 'क्या छेद करना है?' तब वह कहे, 'नहीं, ऐसा नहीं, मैं कुछ कर दूँगा और फिर मशीन लगा दूँगा।' मैंने पूछा, 'क्या फ़ायदा होगा



## दादावाणी

उससे?’ इस पर वह कहे, ‘बहुत लोगों को फ़ायदा हुआ है और आपको आनंद रहेगा न?’ मैंने कहा, ‘मेरा आनंद कम नहीं हुआ है और तू ऐसा करेगा तो मेरा आनंद कम हो जाएगा। क्योंकि यह जो मेरा (कर्मरूपी) कर्ज़ है वह अदा हो जाना चाहिए न?’ यह जो कमी है वह बिना कर्ज़ के तो हो ही नहीं सकती न? किसी प्रकार के कर्ज़ के बगैर यह शारीरिक न्यूनता होती है कहीं? आप क्यों कुछ बोलते नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** बिना कर्ज़ के कमी नहीं होती।

**दादाश्री :** इस पर वह कहने लगे, ‘ऐसा क्या कर्ज़ किया होगा आपने पूर्वजन्म में?’ मैंने कहा, ‘कर्ज़ ऐसा किया था कि तू सुनेगा तो तेरी अधकपारी चढ़ेगी।’ वह कहे, ‘क्या किया था ऐसा?’ मैंने कहा, ‘‘आपके जैसे प्रतिष्ठित लोग सब कहते ‘हमारी बात सुनिए दादाजी’, तब उसे मैं अनसुनी कर देता, उन्हें युज़्लेस (बेकार) कहता।’’ मेरे मन में वह सब युज़्लेस लगता था। यह अक्ल का बोरा, सबको युज़्लेस, युज़्लेस कहता फिरे। मतलब, किसी की सच्ची बात भी नहीं सुने। झूठी बात नहीं सुने उसे तो भगवान चला लेते हैं मगर सच्ची बात तो सुननी चाहिए न! तब वह अहंकार कितना होगा? उसका यह दंड है। क्या हमें दंड चुकता नहीं करना चाहिए? क्या लगता है आपको?

**प्रश्नकर्ता :** हम नहीं मानते, समझ नहीं पाते।

**दादाश्री :** नहीं मानते वह अलग बात है। मगर यह उसका दंड है आज और उसे हमें चुकता कर देना है। हो सकता है कि इसी जन्म में आपको वह कर्ज़ चुकता हो गया हुआ नज़र आए, आप देख पाएँ कि दादाजी के कान अच्छे हो गए हैं। ऐसा क्योंकर होगा? आपको ऐसा लगे कि दादाजी उस कान से अब सुन सकते हैं। अब कुछ लोग तो ऐसा

कहते हैं कि ‘आप पूरा सुनते हैं लेकिन मतलब के बहरे हैं।’ हमारे महात्मा ऐसा नहीं बोलते, लेकिन बाहरवाले जो सगे-संबंधी सब हैं वे कहते हैं कि ‘आप सुनते हैं पूरा लेकिन मतलब के बहरे हैं।’ मैं कहूँ, ‘हाँ, देखो यह मतलब है मेरा, यानी ज़रूरत रही तो सुनना और ज़रूरत नहीं रही तो अनसुना करना।’

**प्रश्नकर्ता :** क्या सचमुच ऐसा है?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं है। सुनने की ज़रूरत ही नहीं लगती है मुझे। क्या सुनें हम? इस कलियुग की काँव-काँव में। इस कलियुग के बोल यानी क्या? काँव-काँव कहलाए। यह कोई संगीत थोड़े ही है?

बेटा आकर कहे, ‘उठिए, अक्ल है या नहीं, जल्दी से खाना खाने चलिए।’ और माँ-बाप कहे, ‘अरे! यदि तुम ऐसा नहीं सुनाते तो भोजन में रुचि रहती लेकिन अब मुझे नहीं खाना तुम्हारा खाना।’ यह कलियुग है, इसलिए इस काल में जिसे कानों से कम सुनाई देता हो तो खुद को भाग्यवान समझना।

**जैसा चिंतन वैसा परिणाम**

**प्रश्नकर्ता :** पॉजिटिव दृष्टि को लेकर दादाजी इस उम्र में भी एकदम यंग (युवा) दिखाई देते हैं।

**दादाश्री :** सब रोज़ ऐसा कहते हैं। इसलिए मैं भी फिर आइने में देखता हूँ कि कैसे दिखाई देते हैं? मुझे भी यंग दिखते हैं। सबके कहने का असर तो होगा न अंदर। मगर मैं कभी ऐसा नहीं बोलूँ कि ‘मैं बूढ़ा हूँ’, क्योंकि ‘मैं तो शुद्धात्मा हूँ’, बूढ़ी तो यह देह होगी। वह भी बोलेगी नहीं। ‘हमें’ पूछे बगैर कैसे बोलेगी? व्यवहार में कहना पड़े कि, ‘अरे, वृद्ध जो ठहरे।’ लेकिन ‘मैं बूढ़ा हूँ’ ऐसा नहीं बोल सकते। क्योंकि ‘मैं तो शुद्धात्मा हूँ’ इसलिए हमारे हिसाब सब अलग तरह के होते हैं। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ होकर यदि ‘मैं बूढ़ा हूँ’ कहा तो सचमुच

## दादावाणी

ऐसे हो जाएँगे। अर्थात् आप जब कहें कि, 'मैं बूढ़ा हुआ' तो वह आप अपने लिए नहीं बोलते हैं, आप अंदरूनी तौर पर समझते हैं कि 'मैं जुदा हूँ' और जो बोला जाता है वह तो 'चंदुभाई' के लिए बोला जाता है। इसलिए आपको असर नहीं होता। सब इफेक्टिव है। इस संसार में जो भी शब्द बोला जाए वह सब इफेक्टिव है।

'चंदुभाई' कहे कि, 'मेरी तबियत बिगड़ी है' तो हम अंदरूनी तौर पर समझें कि वह 'चंदुभाई' की तबियत बिगड़ी है, मगर 'मेरी' नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ दादाजी। ऐसा चंदुभाई के लिए कहना है। और तबियत अच्छी है ऐसा हमें पॉजिटिव बोलना है।

**दादाश्री :** मतलब, 'तबियत अच्छी है' ऐसा कहिए। चंदुभाई कहे कि, 'मेरी तबियत खराब है।' तब हम कहें कि, 'नहीं, अच्छी है।' उसमें कोई लंबी बात नहीं है मगर उन्हें शांति रहेगी। और यदि आप खुद ही कहें कि 'मेरी तबियत अच्छी है', तो अच्छी हो जाए। आप खुद ही कहें कि 'मेरी तबियत खराब है', तो खराब हो जाए। अर्थात् जैसा चिंतन करे वैसी वह हो जाए।

अच्छी वस्तु को उलटी बोलने से बिगड़ जाए और उलटी वस्तु को अच्छी बोलने से सुधर जाती है।

### दुःख खड़े हैं नेगेटिव रुख से

**प्रश्नकर्ता :** किसी भी वस्तु के परिणाम को अच्छी तरह से लेना वह मन की भूमिका नहीं कहलाए?

**दादाश्री :** पॉजिटिव लेना वह मन की भूमिका है। किंतु यदि ज्ञान रहा तभी वह पॉजिटिव लेगा न, वरना नेगेटिव ही देखेगा। यह सारा जगत् दुःखी है। मछली की तरह छटपटा रहा है। घर है, पैसा है,

सबकुछ होने के बावजूद छटपटा रहा है। इसलिए समझना ज़रूरी है।

जीवन जीने की कला जानने की ज़रूरत है। जीवन जीने की कला तो होती ही है न। मोक्ष कुछ सभी का नहीं हो जाता मगर जीवन जीने की कला तो होनी चाहिए न। मोह भले ही करें किंतु मोह से ऊपर जीवन जीने की कला तो जानिए, कि कैसे जीवन जीना है। लोग सुख के लिए भटकते हैं, तब क्या सुख में क्लेश होता है? क्लेश तो उलटे सुख में भी दुःख लाता है। भटकते हैं सुख के लिए और लाते हैं दुःख। यदि जीवन जीने की कला आती, तो भी दुःख नहीं लाते, और यदि दुःख रहा होता तो उसे बाहर निकाल देते।

### ऑपन माइन्ड है पॉजिटिव गुण

जितना माइन्ड ऑपन (खुला मन) रखे उतना समझे कहलाए। माइन्ड जितना ऑपन हुआ उतनी समझदारी कहलाए। कम समझदारीवाला संकुचित होता जाए। जिसका माइन्ड संकुचित होगा वह कहेगा कि 'मैं समझता हूँ मगर वह मनुष्य कुछ भी नहीं समझता।' लेकिन जिसका ऑपन माइन्ड होता है न, वह समझा कहलाए।

जितना ऑपन माइन्ड, उतनी वह ऊँची वस्तु कहलाए। खुद का माइन्ड कैसा है यह समझना चाहिए। हमें (कषायरूपी) ठोकर नहीं लगे और हमारा ऑपन माइन्ड रहे तो समझना कि हमने कैसा ऑपन माइन्ड रखा है। यह मैं तुझे क्यों बताता हूँ? इस समय तेरा मन संकुचित हो गया है। भविष्य में ऐसा संकुचित रहा तो सब बंद हो जाएगा। फिर अंदर कोई अच्छी वस्तु डालना चाहेंगे तो घुसेगी नहीं न? इसलिए माइन्ड ऑपन कर देना। फिर भी वह एकदम से ऑपन नहीं रहेगा। क्योंकि अंदरवाले क्या करेंगे?

**प्रश्नकर्ता :** उछलेंगे।

## दादावाणी

**दादाश्री :** अंदरवाले तुझे कहेंगे कि 'क्या सुनने जैसा है?' तब उन्हें हमें कहना है, 'यहाँ चूप बैठिए।' अंदरवाले तुझसे अलग हैं। वे सभी 'क'वाले हैं। क्या नाम है उन 'क'वालों का? अंदर क्रोधक है जो क्रोध करवाता है। लोभक है जो लोभ करवाता है। चेतक है जो चेतावनी देनेवाला है। भावक है जो भाव करानेवाला है। अंदर होंगे न यह सारे?

**प्रश्नकर्ता :** होते हैं, हरएक में होते ही हैं।

**दादाश्री :** वे सभी होते ही हैं, इसलिए उन सभी से चेतना है। उनको निकालते-निकालते तो मेरा दम निकल गया था। कितना समय गुजरने के बाद निकले थे, वे उपवंशीय हैं। वे खुद की वंशावली का माल नहीं हैं। बाहर से आकर घुस गए हैं। लोग जानते तक नहीं है कि खुद के अंदर से कौन बोल रहा है। खुद को कार्य करना हो और अंदर से किसी और प्रकार की ही सलाह मिले तो क्या हम नहीं समझ जाँ कि यह कोई तीसरा है? क्या ऐसा नहीं होता है? ऐसा तेरे अनुभव में आया है?

**प्रश्नकर्ता :** होता ही है!

**दादाश्री :** वह अंदर तीसरी जाति है इसलिए तुझे सावधान किया। मैंने तेरा मन बहुत संकुचित देखा। ऐसा संकुचित नहीं रखते। वर्ना इतनी बड़ी फिलासफी कैसे समझ पाओगे? माइन्ड ऑपन रखें। किसी की भी सुन लेना एकबार। सुनने के बाद हमें ठीक नहीं लगे तो छोड़ देना और ठीक लगे तो भी बहुत गहराई में मत जाना। हमें जिसके पाँच वाक्य पसंद आए हों उसका छठा वाक्य अंदर लिख लेना। उतना थोड़ा-बहुत विश्वास तो रखना पड़े कि नहीं?

जैसे कि, अभी पंद्रह दिन पहले किसी जगह पर एक स्टीमर डूब गया हो और फिर व्यापार हेतु आज आपको वहाँ पर जाना पड़े, तो स्टीमर में बैठते समय आपको अंदर क्या होगा? घबराहट हो जाएगी। अंदर से आवाज़ आएगी कि 'यदि यह डूब गया

तो?' तब आप क्या कहेंगे?

**प्रश्नकर्ता :** वैसे हम किसी के बारे में अभिप्राय नहीं दे सकते लेकिन यदि ऑपन माइन्ड रहा तो अभिप्राय दे सकते हैं, ऐसा आपने बताया। मतलब, ऑपन माइन्ड अर्थात् आप क्या कहना चाहते हैं?

**दादाश्री :** 'इतना मुझसे होगा और इतना नहीं होगा', अंदर ऐसा रहे तो वे सभी संकुचित माइन्ड है। ऑपन माइन्ड अर्थात्, नेगेटिव वह नेगेटिव और पॉजिटिव वह पॉजिटिव, ऐसे दोनों को समझे और पॉजिटिव में रहे ताकि नेगेटिव आए ही नहीं। और संकुचित माइन्ड मतलब नेगेटिव में रहना। वहाँ फिर पॉजिटिव नहीं आता। ऑपन माइन्डवाले मनुष्य कम होते हैं। आप चाहे किसी भी धर्म की बात करें, कैसी भी बात करें, तब भी उसे भीतर कोई असर नहीं होता, तब वह ऑपन माइन्ड कहलाए, वर्ना तो संकुचितता है।

मन शंकाशील होने के कारण उलटा दिखाई देता है। मन शंकाशील हो तो उसे शुद्ध करना पड़े। किंतु यह सच्ची बात लोगों के हाथ नहीं लगती।

## नहीं झूठा कोई जगत् में

उदाहरण के तौर पर, अभी आप किसी जगह दर्शन करने गए, और वहाँ जाने के बाद आपको ऐसा लगे कि हमने माना था ज्ञानी और निकले ढोंगी। अब, आपका वहाँ जाना वह तो प्रारब्ध का खेल है और मन में जो खराब भाव उनके लिए पैदा हुए कि 'अरे! ऐसे ढोंगी के पास हम कहाँ आधमके?' वह अंदर आपका नेगेटिव पुरुषार्थ हुआ, उसका फल आपको भुगतना पड़े, पाप भुगतना पड़े और ऐसा विचार आना वह स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा होने के बाद तुरंत आपको क्या करना चाहिए? 'अरे, मैं ऐसा गुनाह क्यों करूँ?' ऐसे तुरंत ही सुलटा विचार करके पहलेवाले विचार को पोंछ देना चाहिए।

## दादावाणी

**प्रश्नकर्ता :** माफ़ी माँग लेनी चाहिए न?

**दादाश्री :** हाँ, मन में माफ़ी माँग लेनी चाहिए। भगवान को स्मरण करके या 'दादा' का स्मरण करके प्रतिक्रमण कर लेना कि 'अरे! वह चाहे कैसा भी हो मगर मुझे ऐसा उलटा विचार क्यों आया?' अच्छे को अच्छा कहने में दोष नहीं है लेकिन अच्छे को बुरा कहने में दोष है, और बुरे को बुरा कहने में भी बहुत दोष है। जबरदस्त दोष है। क्योंकि बुरा वह खुद नहीं है, उसके प्रारब्ध ने उसे बुरा बनाया है। वह बुरा नहीं है। प्रारब्ध यानी क्या? उसके संयोगों ने उसे बुरा बनाया है, उसमें उसका क्या गुनाह है?

यह आपकी समझ में आया? बहुत बारीक बातें हैं। यह बहुत गहन बातें हैं। साइन्टिफिकली (वैज्ञानिक रूप से) समझने पर उसका निपटारा होता है वर्ना इसका निपटारा होनेवाला नहीं है।

यानी यदि इतना संक्षिप्त में समझ लिया न कि यह प्रारब्ध और पुरुषार्थ है, यह सब समझ जाए न, तो उसकी गाड़ी सीधी पटरी पर आ जाए। फिर वह किसी जगह भाव नहीं बिगड़ने देगा। जहाँ भाव बिगड़े वहाँ तुरंत भाव सुधार लें फिर वहाँ तो कोई बाधा ही नहीं है।

### जगत् में पॉजिटिव ही सुख देगा

टेपरिकार्ड और ट्रान्समीटर ऐसे तो कई साधन के आज आविष्कार हुए हैं। इसलिए बड़े-बड़े लोगों को डर रहता है कि किसी ने कुछ टेप कर लिया तो? अब इसमें तो केवल शब्द टेप होते हैं उतना ही है, किंतु मनुष्य का बॉडी, मन, सबकुछ टेप हो सके ऐसा है। उसका लोगों को ज़रा-सा भी डर नहीं है। यदि सामनेवाला नींद में हो और आप कहें कि, 'यह नालायक है' तो उसके अंदर वह टेप हो गया, वह फिर उसको फल देगा। मतलब, अगर कोई सो रहा हो तो भी उसके लिए उलटा नहीं बोल सकते।

एक शब्द भी नहीं बोल सकते क्योंकि सब टेप हो जाए ऐसी यह मशीनरी है। यदि बोलना चाहें, तो अच्छा बोलना कि 'साहब, आप बहुत अच्छे मनुष्य हैं।' अच्छा भाव रखना, तो उसके फल स्वरूप आपको सुख मिलेगा। मगर ज़रा-सा भी उलटा बोले, चाहे अँधेरे में या अकेले में भी बोले, तो उसका फल कड़वे ज़हर जैसा आएगा। यह सब टेप ही हो जाएगा, इसलिए अच्छा टेप करवाइए।

**प्रश्नकर्ता :** कडुआ तो चाहिए ही नहीं।

**दादाश्री :** यदि आपको कडुआ चाहिए तो कडुआ बोलना, और अगर नहीं चाहिए तो वैसा नहीं बोलना। कोई मारे तो भी उसे कडुआ मत बोलना, उससे कहना कि, 'तेरा उपकार मानता हूँ।'

भगवान ने तो कहा है कि इस काल में यदि आपको कोई गाली दे गया हो तो उसे खुद खाने पर बुलाना। चाहे कितना भी बुरा हो फिर भी उसे क्षमा करना। यदि 'रिवेन्ज' (बदला) लेने गए तो फिर संसार में खींचे जाएँगे। इस काल में 'रिवेन्ज' लेने का नहीं होता। इस कलियुग में निरी बुराईयाँ ही होती हैं। कौन-से विचार नहीं आएँगे यह कहा नहीं जा सकता। किसी भी हद तक के विचार आ सकते हैं। इस काल के जीव तो बहुत भटकनेवाले हैं। इन लोगों के साथ बैर बाँधें तो हमें भी भटकना पड़े। इसलिए हम कहते हैं, 'सलाम साहब।' इस काल में तुरंत क्षमा कर देना, वर्ना आप संसार में खींचे जाएँगे। क्योंकि यह जगत् तो बैर से खड़ा है।

इस काल में किसी को समझाने जैसा नहीं है। यदि समझाना आए तो अच्छे शब्दों में समझाइए, कि जिससे वह टेप होने पर भी खुद पर जिम्मेदारी नहीं आए। इसलिए पॉजिटिव रहना। यह जगत् पॉजिटिव पर ही खड़ा है। जगत् में 'पॉजिटिव' ही सुख देगा और 'नेगेटिव' सब दुःख देगा। इसलिए यह कितनी बड़ी जोखिमदारी है?

दो ही वस्तुएँ हैं, 'पॉजिटिव' और 'नेगेटिव'। यदि 'नेगेटिव' रुख रखें तो कुदरत किसे 'हैल्प' करेगी? हमारे शब्दकोश में 'नेगेटिव' शब्द नहीं होना चाहिए।

### अक्रम से पॉजिटिव के पथ पर

सारा जगत् 'नेगेटिव' रुख में भटक-भटककर खतम हो गया। यह 'अक्रम' तो उमदा 'पॉजिटिव' मार्ग है।

पॉजिटिव को अपनाए तो उसमें तो कोई हर्ज ही नहीं है, पॉजिटिव लीजिए। मेरा सब पॉजिटिव ही होता है न? हम सारा दिन बोला करते हैं, फिर चाहे उतना टेप हो, लेकिन सब पॉजिटिव ही होता है। हम सारा दिन बोलते रहते हैं मगर उसमें कुछ भी नेगेटिव नहीं होता। नेगेटिव विचार नहीं, नेगेटिव वर्तन नहीं। और यह अक्रमविज्ञान कैसा है? कि जो कुछ भी टेप होता है न, तो वह वास्तव में निपटारा हो रहा है। इसलिए, निपटारे की बाबत के तौर पर, यह विज्ञान कुछ नये ही प्रकार का है। जगत् के लोगों को जो बार-बार उदय में आनेवाला है, वहाँ, आपका वह निपटारा हो जानेवाला है, क्योंकि आप कर्त्ता के रूप में नहीं करते हैं। कर्त्ता होने पर कर्म बँधता है। मतलब, सारे जगत् को तो बड़ी जोखिमदारी है।

### नेगेटिव की कितनी बड़ी जोखिमदारी !

न्याय-अन्याय देखनेवाला तो अनेक व्यक्तियों को गालियाँ देगा। न्याय-अन्याय देखने जैसा नहीं है। न्याय-अन्याय तो जगत् के लिए एक थर्मामीटर के समान है, यह जानने के लिए कि किस को कितना बुखार चढ़ा है और कितना उतर गया है। जगत् कभी न्यायी होनेवाला नहीं है और कभी अन्यायी भी नहीं होगा। यही की यही मिलावटी खीचड़ी चलती ही रहेगी।

यह जगत् जब से है तब से ऐसा ही है।

सत्युग में ज़रा कम बिगड़ा हुआ वातावरण होता है और आज उसका ज्यादा असर है। रामचंद्रजी के समय में भी सीताजी का हरण करनेवाले थे, तो आज क्या नहीं होंगे? यह चलता ही रहेगा। यह मशीनरी पहले से ऐसी ही है। लोगों की समझ में आता नहीं है, अपनी जिम्मेदारियों का भान नहीं है, इसलिए गैरजिम्मेदार होकर बोलना नहीं, गैरजिम्मेदार वर्तन करना नहीं और सब पॉजिटिव लेना। किसी का भला करना चाहो तो करना। किंतु बुरे में मत पड़ना और बुरा मत सोचना। किसी का बुरा सुनना तक नहीं, बहुत जोखिमदारी है। इतने बड़े जगत् में, मोक्ष तो खुद के भीतर ही पड़ा है, किंतु मिलता नहीं है! और न जाने कितने ही जन्मों से भटक-भटक करते हैं!

### पॉजिटिव 'बोल' का पॉजिटिव असर

एक भाई मुझसे पूछने लगे कि 'आपके समान मीठी वाणी हमारी कब होगी?' तब मैंने उनसे कहा कि 'यह आपके जो नेगेटिव शब्द हैं सारे वे बोलने बंद होंगे तब।' क्योंकि प्रत्येक शब्द अपने गुण-पर्याय के साथ होता है।

हमेशा पॉजिटिव बोलिए। अंदर आत्मा है, आत्मा की हाज़िरी है इसलिए पॉजिटिव बोलिए। पॉजिटिव में नेगेटिव नहीं बोल सकते। वास्तव में जो पॉजिटिव है उसमें नेगेटिव बोलना वह गुनाह है। पॉजिटिव में नेगेटिव बोलते हैं इसलिए ये सारी मुसीबतें खड़ी होती हैं। 'कुछ भी बिगड़ा नहीं है' ऐसा बोलने के साथ ही कितना परिवर्तन हो जाता है, इसलिए पॉजिटिव बोलिए।

### स्याद्वाद का हेतु

वाणी हमेशा दो व्यू पॉइंट एक साथ नहीं दिखला सकती। 'एट-ए-टाइम' (एक ही समय पर) एक शब्द निकले, और वह नेगेटिव और पॉजिटिव दोनों साथ नहीं दिखला सके। या तो

## दादावाणी

पॉजिटिव दिखलाए, या तो नेगेटिव दिखलाए। बाद में बदल दे वह अलग बात है, लेकिन 'एट-ए-टाइम' दोनों भाव नहीं दिखला सकें न? इसलिए उसे व्यक्त करने दूसरा वाक्य बोलना पड़े। 'दर्शन' में 'एट-ए-टाइम' संपूर्ण रूप से देखा जा सके, किंतु उसका वर्णन करना चाहें तो कोई भी मनुष्य 'एट-ए-टाइम' व्यक्त नहीं कर सके। इसलिए वाणी स्याद्वाद कहलाती है।

वाणी में नेगेटिव और पॉजिटिव दोनों एक साथ नहीं बोल सकते। एक साथ बोलने पर, अगर नेगेटिव बोले तो पॉजिटिव अधूरा रह जाए अथवा पॉजिटिव बोले तो नेगेटिव अधूरा रह जाए, अर्थात् एक साथ नहीं बोल सकते न! इसलिए वीतरागों को कहना पड़ा कि जगत् अनादि-अनंत है। पॉजिटिव और नेगेटिव एक साथ नहीं बोल पाए, इसलिए ऐसा अनादि-अनंत कहना पड़ा।

### कैसा सरल उपाय !

स्याद्वाद यानी क्या कहना चाहते हैं? शब्द, हमारा भाव पूर्णरूप से प्रदर्शित नहीं कर सकते हैं। एक शब्द से हम वो भाव नहीं बता सकते। दोनों भाव बताने की इच्छा होने के बावजूद नहीं बता सकते। इसलिए फिर शब्द आपस में लड़ेंगे। मतलब, जितना हो सके उतना कम बोलिए और यदि बहुत ज़रूरी रहा तो लिखकर देना। उसमें सारे भाव प्रदर्शित किए जा सकते हैं। आगे का भी पढ़ पाएँ और पीछे का भी पढ़ पाएँ, और बोलने में तो एक शब्द में दो भाव हो नहीं सकते इसलिए भगवान ने उसे 'स्याद्वाद' कहा। और मैंने कहा कि, 'यह जो बोलते हैं वे सारे टेपरिकार्डर हैं!'

### पॉजिटिव दृष्टि से प्रोत्साहन

इस जगत् में हमेशा 'पॉजिटिव' लीजिए। 'नेगेटिव' की ओर कदम मत बढ़ाना। 'पॉजिटिव' का उपाय होगा। मैं आपको सयाना कहूँ और आपका

अहंकार यदि ज्यादा अकड़ दिखाए तो आपको धौल जमाना भी मुझे आता है, वर्ना वह उलटी राह चल पड़े और यदि 'एन्करेज' (प्रोत्साहित) नहीं करें तो आगे प्रगति रुक भी जाती है।

मूरख कहने पर भी बिगड़ जाए और बहुत सयाना कहने पर भी बिगड़ जाए। क्योंकि सयाना कहने पर उसके अहंकार को 'एन्करेजमेंट' (प्रोत्साहन) मिलता है और मूरख कहने पर 'साइकोलॉजिकल इफेक्ट' (मानसिक असर) उलटा पड़ता है। सयाने मनुष्य को पच्चीस-पचास बार मूरख कहने पर उसके मन में वहम हो जाएगा कि 'क्या मैं सचमुच पगला हूँ?' ऐसा करते-करते वह पागल हो जाएगा। इसलिए मैं पागल को भी 'तेरे जैसा सयाना इस जगत् में कोई नहीं है' ऐसा कहकर उसे प्रोत्साहित किया करता हूँ।

दुनिया में किसी को बिना अक्ल का मत कहना। अक्लमंद ही कहना, तू सयाना है ऐसा ही कहना, तो आपका काम होगा। एक मनुष्य अपनी भैंस से कहता था कि 'तू बहुत सयानी है मैया, बहुत अक्लमंद है, बहुत समझदार है।' मैंने उनसे पूछा, 'तू भैंस को ऐसा क्यों कहता है?' तब वह कहे कि 'ऐसा नहीं कहूँ तो भैंस दूध देना बंद कर देगी।' अब यदि भैंस ऐसा समझती है तो मनुष्य क्या नहीं समझेंगे?

### पॉजिटिव स्पंदन के परिणाम पॉजिटिव

हम बावड़ी में जाकर कहें कि 'तू बदमाश है', तो बावड़ी भी कहेगी (प्रतिघोष होगा), 'तू बदमाश है' और हम कहें कि 'तुम चौदह लोक के नाथ हो।' तो वह भी कहेगी कि 'तुम चौदह लोक के नाथ हो।' इसलिए इसमें हमें जो अच्छा लगे वह बोलना। ऐसा प्रोजेक्ट कीजिए कि आपको अच्छा लगे। यह सारा आपका ही प्रोजेक्शन है। इसमें भगवान ने कोई दखल नहीं की है।

मनुष्य के अंदर जो 'नेगेटिव' होता है वह उलझन में डालता है, इसलिए पॉजिटिव में रहिए। इस जगत् में मनुष्य जब तक भय से थरता है तब तक किसी भी प्रकार का धर्म प्राप्त नहीं कर सकता। 'आपका कोई भी मालिक नहीं है' यह कहकर हम आपका भय-फड़फड़ाहट चारों ओर से निकाल देते हैं, और आपको अन्य कोई भय सताता हो तो उस भय को भी निकाल देते हैं, उसका मतलब यह नहीं है कि आप निर्भय होकर 'नेगेटिव' की ओर जाएँ, हम ऐसी छूट देना नहीं चाहते हैं!

### ज्ञान से पाया पॉजिटिव पद

**प्रश्नकर्ता :** आपने इतना सरल और सुगम मार्ग बतला दिया है, मगर यदि अविश्रुत जागृति नहीं रखेंगे और यदि पाँच आज्ञा का पालन नहीं हो सका तो दादाजी ने जो ज्ञान दिया है वह शस्त्र के रूप में परिणमित होगा।

**दादाश्री :** तो भटक जाएँगे। फिर भी, घँघोला हुआ घी दिए जलाने के काम में अवश्य आएगा, यानी कई जन्म कम हो जाएँगे। मगर यदि पाँच आज्ञा बंद हो गई तो, आप जो धारणा रखते हैं उस स्थान पर जल्दी नहीं पहुँच पाएँगे। यह काल ही सारा कुसंग का काल है। घर में कुसंग, ऑफिस में कुसंग, व्यापार में कुसंग, जहाँ देखें वहाँ कुसंग ही कुसंग। अब ऐसे काल में यदि पाँच आज्ञाएँ नहीं रही तो कोई न कोई कुसंग उसे खा जाएगा। मतलब, पाँच आज्ञा का पालन करने पर उसे कुसंग छूता नहीं। वर्ना यहाँ (सत्संग में) पड़े रहिए, पाँच आज्ञा नहीं पालनी हो तो यहाँ मेरे साथ (सत्संग में) पड़े रहिए, तब भी कुसंग नहीं छुएगा।

फिर भी, जब से यह ज्ञान लेते हैं तब से उसका पॉजिटिव भाव तो हो ही जाता है। इस विज्ञान से मोक्ष के लिए चेतावनी देनेवाली प्रज्ञाशक्ति तो उसे उत्पन्न हो जाती है। फिर उसे खुद पॉजिटिव

रहना चाहिए। नेगेटिवसेन्स नहीं रखनी चाहिए। पॉजिटिव मतलब उसमें हमारी खुशी होनी चाहिए, और जो सभी पॉजिटिवसेन्स रखते हैं तो फिर वह इस संसार की कोई भी अड़चन को छूने नहीं देती है। यदि वह मनुष्य खुद बराबर रहे तो संसार की अड़चन को छूने नहीं दे, ऐसा प्रबंध अंदर हो जाता है। क्योंकि, जब आत्मा प्राप्त नहीं हुआ था मतलब भगवान प्राप्त नहीं हुए थे और तब भी संसार तो चलता ही था, तो फिर क्या प्राप्ति के बाद बिगड़ जाएगा? तब कहे, 'नहीं बिगड़ता।'

### नेगेटिव को 'लेट गो' करना सीखें

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा अंदर होता है कि परिवार के साथ या औरों के साथ हमारा जो व्यवहार हो वह अच्छी तरह से होना चाहिए। ऐसी भावना रहती है।

**दादाश्री :** अच्छी तरह से होना चाहिए, ऐसा भाव रहना यह तो हमारे लिए एक हक्रीकृत है, फिर जो हुआ वह सही। उदाहरण के तौर पर, जैसे कि हक्रीकृत में हमें ऐसा भाव होना चाहिए कि 'हमें इन्डिया जाना है', लेकिन फिर यदि हवाई जहाज टूटकर गिर गया तो वह भी सही है, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। उसे हम थोड़े ही मना कर सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जी, नहीं।

**दादाश्री :** ऐसा तो नहीं कह सकते कि 'अभी तो हम इन्डिया नहीं पहुँचे हैं और तूने ऐसा क्यों किया?' मतलब, इसका अन्य कोई उपाय नहीं है। हमें पॉजिटिव हिसाब रखना है, नेगेटिव हुआ उसे लेट गो (गौण) करना है।

### पॉजिटिवसेन्स से निकले हल

**प्रश्नकर्ता :** आर्तध्यान और रौद्रध्यान करना ही नहीं चाहते हैं फिर भी हो जाता है। ऐसा क्यों?

**दादाश्री :** मेरा कहना यह है कि वह जो हो जाता है उसमें हर्ज नहीं है, किंतु आप प्रतिक्रमण किया करें न! हमारा उसमें विरोध है ही नहीं कि आप ऐसा क्यों करते हैं? आप प्रतिक्रमण किया करें, ऐसा कहते हैं हम। हम यहाँ से किसी को निकालना नहीं चाहते हैं। हमारे यहाँ 'नेगेटिवसेन्स' (नकारात्मक समझ) है ही नहीं। 'पॉजिटिवसेन्स' (हकारात्मक समझ) है। हम किसी का निकंदन निकालना नहीं चाहते हैं। आप तो सिर्फ उसका प्रतिक्रमण किया करें ताकि वे (दोष) अपने आप चले जाएँगे।

आप किसी को डाँटें वह तो प्रकृति है, उसका हर्ज नहीं है। लेकिन यदि आपने उसका 'प्रतिक्रमण' किया तो वह 'पॉजिटिवसेन्स' है। और 'प्रतिक्रमण' नहीं किया तो वह 'नेगेटिवसेन्स' है।

हमें अब मोक्ष का काम निकाल लेना है। प्रतिक्रमण करते रहना। वही उसका उपाय है और वही उसका इलाज है! आपको कुछ लेना-देना नहीं है, आत्मा को आर्तध्यान और रौद्रध्यान होते ही नहीं हैं। हमारे महात्माओं को आर्तध्यान-रौद्रध्यान होते ही नहीं है क्योंकि वे शुद्धात्मा हैं, नामरूप नहीं है खुद।

**प्रश्नकर्ता :** भूतकाल में आर्तध्यान और रौद्रध्यान में जो उलझ गए हों, और पहले जब ऐसे कार्य कर चुके हों जिनके परिणाम आज उदय में आए, तो क्या करना?

**दादाश्री :** वे तो आएँगे ही न! आनेवाले ही हैं। मगर आज ज्ञान से उन्हें छोड़ते जाएँ। उन दिनों ज्ञान नहीं था इसलिए छोड़ नहीं पाते थे। अब हम ज्ञान के आधार पर छोड़ सकते हैं। प्रतिक्रमण उसी कारण से करना है। उन दिनों प्रतिक्रमण नहीं किए थे, अतिक्रमण का दोष लगा है। सारा जगत् इस दोष को लेकर खड़ा रहा है। जब से प्रतिक्रमण होने लगे, तब से छुटकारा होने लगता है।

## हमें पॉजिटिव रखना है

अब 'दादा' के ज्ञान को रोशन करने का हमें प्रयत्न करना है। लेकिन ऐसा करने के बावजूद यदि रोशन नहीं हुआ, तो नहीं हुआ। फिर उस बात को थोड़े ही पकड़े रखना है? हमारे प्रयत्न 'पॉजिटिव' होने चाहिए। यदि संयोग उसे 'नेगेटिव' करे तो फिर उसका हम क्या करनेवाले हैं? ऐसी पकड़ थोड़े ही पकड़ी जाती है? किंतु लोग तो पकड़ पकड़े रखते हैं कि (उसे) हराना ही है! यह हार-जीत के खेल! किसी को हराना, उसे तो हम बहुत बड़ा जोखिम मानते हैं। फिर वह हमें हराने की तैयारी में लग जाएगा। उसके बजाय उसे जीताकर रवाना कर दीजिए, फिर रहेगी कोई झँझट? फिर हमारी ओर से कोई बात ही नहीं रहती न! फिर उसका ध्यान दूसरी ओर लग जाएगा। और, उनको हराने पर हमारी ओर उनकी झँझट खड़ी रहेगी न? उनको जीता दिया तो फिर उनका ध्यान हमारी ओर से उठकर दूसरी ओर लग जाएगा।

मतलब यह 'अक्रम विज्ञान' बहुत ही उमदा है न! दादाजी के कहे अनुसार चलने पर इन सभी झँझटों से छुटकारा हो जाएगा, अंदर से हम नाटकीय रहें और लोगों के साथ व्यवहार का निपटारा भी हो जाए। यदि सारा व्यवहार नहीं निपटाएँ तो लोग लाल झंडी दिखलाएँ। और व्यवहार का निपटारा कर दिया तो कोई लाल झंडी दिखलाता ही नहीं। (मोक्ष की ओर बढ़ने का) रास्ता ही क्लियर हो जाता है। यह 'विज्ञान' ही अलग प्रकार का है। हमें किसी के पास से कुछ लेना नहीं है, ऐसा कोई कपट नहीं है, यह निर्विवाद बात है। किसी के साथ 'यह हमारा और यह पराया' ऐसा भी कुछ नहीं है, यह भी निर्विवाद बात है। इसलिए फिर हमें क्या झँझट है?

## नियम से बाहर क्या हम चल सकें?

लोग कभी न कभी तो सयाने हो जाएँगे।



## दादावाणी

यदि वे नहीं हुए तो आखिर हम तो सयाने होंगे ही न। हम कब सयाने कहलाएँ? कि जब हम लोगों को सयाने कहें। मतलब 'पॉजिटिव' रख है हमारा। उनका स्वीकार करना है हमें। वे बुराई करें मगर हम बुराई नहीं कर सकते। वे चाहे नियम के बाहर चलें जाएँ, मगर हमसे नहीं चला जाए।

**प्रश्नकर्ता :** आप यदि थोड़ी बुराई करें तो चलेगा। हमसे नहीं की जाती।

**दादाश्री :** हम भी ऐसा नहीं बोलते, मगर उसके दिमाग का पारा चढ़ा हुआ हो तो फिर उसे उतारने के लिए बोलेंगे, लेकिन यदि खून निकल आए तो तुरंत दवाई लगा देंगे। (उसे भीतर ज्यादा असर होने लगे तो समझा-बुझाकर ठीक कर देते हैं।)

### सम्यक् दृष्टि से नुकसान में भी मुनाफ़ा

महावीर भगवान ने अपने शिष्यों को सिखलाया था कि आप जब बाहर जाएँ और लोग कभी लाठी से प्रहार करें तो हमें समझना है कि केवल लाठी से प्रहार ही किया है न! हाथ तो नहीं तोड़ा है न! इतनी तो बचत हुई। अर्थात् इसे फ़ायदा समझना। किसी ने एक हाथ तोड़ दिया तो समझना कि दूसरा तो नहीं तोड़ा न! दोनों हाथ यदि काट डालें तब कहना कि दोनों पैर तो बच गए न? दो हाथ और दो पैर काट डालें तो कहना कि मैं जीवित तो हूँ अभी। आँखों से दिखाई तो देता है अभी। भगवान ने लाभालाभ दिखलाया। तू रोना नहीं, हसता रहे, आनंद में रहे। बात गलत है क्या?

भगवान ने सम्यक्दृष्टि से देखा, ताकि नुकसान में भी नफा दिखाई दे।

हमें कोई गालियाँ दें तो सुन लेना। हमें नेगेटिव नहीं, पॉजिटिव लेना है। नेगेटिव तो जगत् में है ही।

### ज्ञानी मोड़े पॉजिटिव पथ पर

मैं तो पॉजिटिव करना चाहता हूँ। नेगेटिवसेन्स

ही लाना नहीं चाहता। यदि कोई अच्छा हो, तो मैं उसकी अच्छाई की पुष्टि कर दूँ। ताकि, जितना अच्छा हो वह सब प्रकाशमान हो जाए और उसका अच्छापन इतनी जगह रोक ले कि नेगेटिव उड़ ही जाए। जगत् के लोगों को आज तक नेगेटिव ही भटकाता रहा है।

शास्त्रकारों ने पॉजिटिव के बारे में क्या कहा है? कि यदि तू पॉजिटिव करना चाहे तो जब बिजली चमके तब मोती पिरो लेना (मौके का लाभ लेकर ध्येय की पूर्ति की ओर आगे बढ़ना), ऐसा करते करते माला पूरी हो जाएगी (ध्येय पूरा होगा)। वह बिजली की चमक हमेशा रही या नहीं रही, इसका कोई ठिकाना नहीं है।

### सैद्धांतिक बात, ज्ञानी की

हमारा सिद्धांत क्या है? पॉजिटिव। नेगेटिव नहीं। कोई तलवार लेकर आया हो और हमारे हाथ में भी यदि तलवार रही तो उसे नीचे रख देना। यह अहिंसक क्रतलखाना है, जहाँ जीवहिंसा नहीं होती। सारे भ्रष्टाचारी गुणों का क्रतल हो जाए और सदाचारी गुण उत्पन्न हो जाए। बाहर के सारे गुण बदल जाएँ।

जीवन में एक प्रिन्सिपल रखना। हमेशा पॉजिटिव रहना, नेगेटिव के पक्ष में कभी भी नहीं बैठना। सामने से नेगेटिव आए वहाँ मौन हो जाना।

कई साल गुज़र गए हैं किंतु मेरा मन ज़रा-सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। किसी भी संयोग में ज़रा-सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। यदि लोगों का मन पॉजिटिव हो जाए तो वे भगवान ही हो जाएँ। इसलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि समभाव से निपटारा करके नेगेटिवनेस (नकारात्मकता) को छोड़ते जाइए। तो फिर पॉजिटिव अपने आप रहेगा। व्यवहार में पॉजिटिव और निश्चय में पॉजिटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं।

जय सच्चिदानंद

जिस भूमि पर अनुपम आत्मविज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान को अद्भूत आत्मज्ञान प्रकट हुआ, उस सुरत शहर में मनाया जाएगा.....

## परम पूज्य दादा भगवान का 90<sup>वाँ</sup> जन्मजयंती महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दिनांक २८ अक्टूबर से १ नवम्बर २००९

- ✦ आध्यात्मिक ज्ञानशिविर - २८ से ३१ अक्टूबर, सुबह १० से १२-३०, रात ८-३० से ११
  - ✦ ज्ञानविधि (आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग) ३१ अक्टूबर (शनि), शाम ७-३० से ११
  - ✦ जन्मजयंती-१ नवम्बर, सुबह ८-३० से १-पूजन-दर्शन-भक्ति तथा शाम ४-३० से ६-३०-दर्शन
- स्थल : ब्रजभूमि ग्राउन्ड, ब्रज चोक, हवेली रोड, सरथाणा जकातनाका के पास, वराछा रोड, सुरत.

फोन: 9426478791 (महोत्सव स्थल रेल्वे स्टेशन से 7 कि.मी. की दूरी पर है.)

### बाहरगाँव से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ

- (१) इस महोत्सव में भाग लेने इच्छुक महात्मा-मुमुक्षु दि. १० अक्टूबर, २००९ तक अपने गाँव/शहर के सत्संग सेन्टर में रजिस्ट्रेशन करवाएँ और जहाँ सत्संग सेन्टर नहीं है, वे महात्मा-मुमुक्षु अडालज त्रिमंदिर (फोन: ०७९-३९८३०४००) पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवा लें।
- (२) महोत्सव में स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग होने से अपना सामान अलग से लाएँ।
- (३) ओढ़ने एवं बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, टोर्च, लॉक, ज़रूरी दवाएँ अपनी ज़रूरत के अनुसार साथ ले आएँ।
- (४) किसी भी प्रकार की अनावश्यक क्रीमती चीज़ें साथ में न लाएँ।

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

- भारत ✦ 'संस्कार' पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (हिन्दी में)  
✦ 'आस्था' पर हर रोज़ शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में)  
✦ 'सह्याद्रि' दूरदर्शन मराठी पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरु, शनि) तथा सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध, शुक्र) - (मराठी में)  
✦ गुजरात में 'दूरदर्शन' पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)  
✦ 'दूरदर्शन - डीडी-गुजराती' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- USA ✦ 'TV Asia' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- USA-UK ✦ 'Aastha International' पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
- Africa ✦ 'Aastha International' पर हर रोज़ सुबह १०-३० से ११ (गुजराती में)
- ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

- भारत ✦ 'झी जागरण' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)  
✦ 'दूरदर्शन' डीडी-गुजराती पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
- U.S.A. ✦ 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- USA-UK ✦ 'Aastha International' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)
- Africa ✦ 'Aastha International' पर हर रोज़ रात १२ से १२-३० (गुजराती में)

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### दुबई (यु.ए.ई.)

३० सितम्बर - १ अक्टूबर (बुध-गुरु), रात ८ से १० - सत्संग

२ अक्टूबर (शुक्र)-दोपहर ४ से ७ - ज्ञानविधि

स्थल : हॉटल Dhow Palace, स्टान्डर्ड चार्टर्ड बैंक के पास, बर दुबई.

फोन : (+971 50) 5536345, 9106790, email : appu\_vora@hotmail.com

### नकुरु-नैरोबी (केन्या)

५ अक्टूबर (सोम) - रात ८ से १०-३० - ज्ञानविधि, स्थल : मसाई एवन्यु, सेक्शन 58, नकुरु.

६-७ अक्टूबर (मंगल-बुध), शाम ७-३० से १० - सत्संग

८ अक्टूबर (गुरु), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि

स्थल : विशा ओशवाल सेन्टर ऑडिटोरियम, रिंग रोड, नकुमेट यु.के. के सामने, नैरोबी.

आध्यात्मिक ज्ञानशिविर : ९ से ११ अक्टूबर (शुक्र-शनि-रवि)

स्थल : ब्रुकसाइड स्कूल, मगाडी रोड, लंगाता, नैरोबी. फोन : +254 726277708, 724841001

### त्रिमंदिर अडालज

१७ अक्टूबर (शनि) रात ८-३० से १०-३० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम

१९ अक्टूबर (सोम) सुबह ९ से ११ - (वि.सं.) नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन

७ नवम्बर (शनि) शाम ४-३० से ६-३० - सत्संग

८ नवम्बर (रवि) दोपहर ३-३० से ७ - ज्ञानविधि

## हिन्दी में सत्संग कार्यक्रम

### कोलकता

१२ से १४ नवम्बर (गुरु-शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३० - सत्संग

१५ नवम्बर (रवि)-शाम ५-३० से ८-३० - ज्ञानविधि

स्थल : विद्यामंदिर (हिन्दी हाईस्कूल), १, मोईरा स्ट्रीट, मीन्टो पार्क के सामने. फोन: 033-32933885

### पटना

१७-१८ नवम्बर (मंगल-बुध), शाम ५-३० से ८ - सत्संग

१९ नवम्बर (गुरु) -शाम ५ से ८ - ज्ञानविधि

स्थल : भारतीय नृत्यकला मंदिर, फ्रेजर रोड, रेडियो स्टेशन के सामने, पटना. फोन : 9431015601

## भूज (कच्छ) त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २००९ (ज्ञानविधि-२५ दिसम्बर)

स्थल : त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, सहयोगनगर के पास, एरपोर्ट रोड, भूज. फोन : ९९२४३४३७६४

### अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से त्रिमंदिर अडालज सिटी बससेवा दुबारा शुरू

८९/१ रूट नंबर की सिटी बस अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन (कालुपुर AMTS बसस्टैन्ड) और त्रिमंदिर अडालज के बीच दि. २० अगस्त २००९ से शुरू हो चुकी है। यह बससेवा सुबह ६-३० से रात को ११ बजे तक लगभग हर ४० मिनट के अंतर पर उपलब्ध है।

सितम्बर २००९  
वर्ष - ४, अंक - ११

# दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011  
Valid up to 31-12-2011  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011  
Valid up to 31-12-2011  
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.



## पोजिटिविटी, अक्रम विज्ञान से...

यह अक्रम विज्ञान व्यक्ति को पोजिटिव साईड में रख देता है। पूरा नेगेटिव भाव ही उड़ गया। यह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है ! इसलिए कहते हैं कि यह जो हाथ में आया है वह पूरा कर लो और अपना काम निकाल लो। इतना ध्यान में, लक्ष्य में रखना कि यह जो ( अक्रम विज्ञान रूपी ) सामान है, उससे पूरी तरह अपना ( मोक्ष का ) काम निकाल लेने जैसा है।

-दादाश्री



Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at  
**Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chambers, Income Tax,  
Ahmedabad-14 and published.